रजिस्ट्री सं० डी- 222 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 1] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 5, 1974 (पौष 15, 1895)

No. 1] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 5, 1974 (PAUSA 15, 1895)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

5 JUN 1974

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 28 फरवरी 1973 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 28th February 1973 :—

अंक Issue	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject

Division IOD
Acc. No. IOD-11091
Date 26.6.76
Call No.
Processed Checked

—शून्य—

—Nil—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियन्त्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र नियन्त्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं।)	1
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	1
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	1
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	1
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	1
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	1
पूरक संख्या 1—	
29 दिसम्बर, 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	1
15 दिसम्बर 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा कई बीमारियों से हुई मृत्यु-सम्बन्धी आंकड़े	17

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence.	1
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of T	1
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	1
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	1
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	1
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	1
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	1
SUPPLEMENT No. 1	
Weekly Epidemiological Reports for week ending 29th December 1973	1
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending	17

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notification relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 17 दिसम्बर 1973

सं० 86-प्रेज/73—निम्नलिखित व्यक्ति द्वारा अपने जीवन को गंभीर संकटपूर्ण परिस्थितियों में डालते हुए जीवन रक्षा कार्य में उल्लेखनीय साहस का परिचय दिये जाने के लिए राष्ट्रपति उन्हें सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक सहर्ष प्रदान करने की स्वीकृति देते है :—

श्री रामेश्वर दयाल भार्गव,
कन्डक्टर,
मध्य प्रदेश राज्य रोडवेज परिवहन निगम,
शिवपुरी,
मध्य प्रदेश ।

दिनांक 21 जुलाई, 1971 को श्री रामेश्वर दयाल भार्गव पिछोर से शिवपुरी जाने वाली सार्वजनिक बस सं० एम० पी० एच० 6681 मे यात्रा कर रहे थे । वह बस अत्यधिक बाढ़ वाले भंवर नाला पार करते समय बह गई । चालक को छोड़ कर, जो बच निकलने में सफल हो गया, उस बस में सवार अन्य सभी व्यक्ति उसमें फंस गये । श्री भार्गव ने आपत्कालीन द्वार के शीशे तोड़े और अपने आप बाहर निकलकर उस बस की छत पर चढ़ गये । तब उन्होंने कई फंसे हुए सह-यात्रियों को बाहर खींचा और उन्हें उस बस की छत पर बैठाया । शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया कि बचाये गये व्यक्ति बाढ़ की तेज धारा में बहने ही वाले हैं । इस खतरे से बचाने के लिए उन्होंने यात्रियों के सामान को सुरक्षित रखने की जाली उठाई और उसका एक सिरा बस के साथ बांध दिया और दूसरा सिरा नाले के तट पर उखड़े हुए पेड़ से बांध दिया । इसके बाद वे यात्रियों को एक-एक करके तट पर सुरक्षित स्थान पर ले गये । उन्होंने एक पगड़ी का प्रयोग कर एक पुलिस के सिपाही को भी उस नाले से बाहर खींचा अन्यथा जो डूब ही जाता । वे तब तक लगातार जीवन रक्षा कार्य करते रहे जब तक कि वह स्वयं पूर्ण रूप से थकान से चूर हो कर गिर न गये । श्री भार्गव ने असाधारण मानवतावाद की भावना का प्रदर्शन किया और अपने प्राणों को बार-बार संकट में डालते हुए दर्जन प्राणियों को मौत के मुंह से बचाया ।

सं० 87-प्रेज/73—निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन को भारी संकटपूर्ण परिस्थितियों में डालते हुए जीवन रक्षा कार्य में साहस और तत्परता का परिचय देने के लिए राष्ट्रपति उन्हें उत्तम जीवन रक्षा पदक सहर्ष प्रदान करने की स्वीकृति देते हैं :—

1. श्री वेणुगोपाल, ग्राम धर्मपुर, डाकघर शिवपुरम्,
थाना तथा तहसील: रनगट,
मध्य अण्डमान, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह ।

2. श्री गोपीनाथन,
ग्राम धर्मपुर, डाकघर : शिवपुरम्,
थाना तथा तहसील: रनगट,
मध्य अण्डमान, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह ।

दिनांक 25 दिसम्बर, 1971 को अण्डमान मे रनगट स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से कई स्कूली बच्चे धर्मपुर गांव लौट रहे थे । उन्हें अपने गांव पहुंचने के लिए एक नाला पार करना पड़ता था जिसमें भारी बाढ़ आई हुई थी । दो किसानों के अतिरिक्त 11 लड़कियां और 4 लड़के डिंगी (नाव) में सवार हुए । अचानक यह डिंगी तेज धारा में फंस गई और उलट गई और नाव में सवार सभी व्यक्ति नाले में गिर पड़े । दो किसान और दो लड़के तो तैर कर पार आ गये । वेणुगोपाल और गोपीनाथन नामक अन्य दो लड़के लड़कियों को बचाने में लग गये और उनमें से आठ लड़कियों को उठाकर उलटी डिंगी (नाव) पर बिठाने में सफल हुए । संतुलन ठीक न रहने के कारण वह डिंगी फिर उलट गई और वे लड़कियां पुन: नाले में गिर पड़ीं । वेणुगोपाल और गोपीनाथन अपने बहादुरी के प्रयत्नों में लगे रहे । आठ लड़कियों में से तीन ने वेणुगोपाल को पकड़ लिया किन्तु उन्होंने स्थिति को सम्भाला और उनमें से दो लड़कियों को डिंगी पकड़वा दी और तीसरी को उसके बाल पकड़ कर किनारे तक खींच लाये । वह वापिस आये और उन दो लड़कियों में से एक को जो डिंगी से अपनी पकड़ करीब-करीब छोड़ने ही वाली थी बचाया । गोपीनाथन ने दूसरी लड़की को भी खींचते हुए किनारे तक लाकर उसके प्राण बचाये । जब डूबती हुई लड़कियों में से एक ने नाविक श्री सुकुमारन को पकड़ा तो गोपीनाथन ने तुरन्त उसे पकड़ा और उसे पानी से ऊपर उठा दिया । लड़कियों को डूबने से बचाने के अपने साहसिक प्रयत्नों में वेणुगोपाल और गोपीनाथन ने अपने प्राणों को जोखम में डालते हुए उत्कृष्ट साहस और दृढ़-निश्चय का प्रदर्शन किया । अपने बहादुरी के प्रयत्नों से उन्होंने चार युवा लड़कियों की जानें बचाई ।

3. मास्टर परमेश्वरन राजप्पन,
परीयार्थु वीडू,
ग्राम वाजप्पली वेस्ट,
चंगनाचेरी, जिला कोट्टयाम (केरल) ।

दिनांक 12 अक्तूबर, 1971 को जिला कोट्टयाम के वाजप्पली वेस्ट यू० पी० स्कूल में पहली श्रेणी में पढ़ने वाला 5 वर्षीय बालक पी० शाजी अचानक विद्यालय के अहाते के 60 फीट गहरे कुएं में जो कि इस्तेमाल में नहीं आता था, फिसलकर गिर गया। बालक की चिल्लाहट सुनकर कुछ व्यक्ति घटनास्थल की ओर भागे। उनमें से एक किशोरावस्था का विद्यार्थी मास्टर परमेश्वरन राजप्पन एक रस्सी के सहारे तुरन्त कुएं में उतरा और उसके बाद कुएं में कूद पड़ा। तब तक शाजी नीचे कुएं की तली तक डूब चुका था। मास्टर राजप्पन ने पानी में गोता लगाया और शीघ्र ही उस बालक को पानी से बाहर ले आया। शाजी को अपने बायें हाथ में थामें हुए वे करीब 5 मिनट तक पानी में तैरते रहे और तब कुएं में नीचे लटकाई गई रस्सी की मदद से बच्चे को सुरक्षित स्थान पर ले आये।

इस प्रकार मास्टर परमेश्वरन राजप्पन ने अपनी जान को खतरा होते हुए भी उस बालक को डूबने से बचाने में पहल, सूझ-बूझ, तत्परता और उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

4. श्री भालचन्द्र किसन काटे,
272, डपोडी,
पूना।

दिनांक 29 जून, 1971 को मन्दाकिनी भिकोबा काटे, आयु 10 वर्ष और जानाबाई बबन मुकुटे, आयु 14 वर्ष नामक दो लड़कियां पूना में पवना नदी में कपड़े धो रहीं थीं। एक कुत्ते के भौंकने से कुमारी मन्दाकिनी घबड़ा कर तेज बहती हुई नदी में गिर पड़ी और धार में बह गई। दूसरी लड़की जानाबाई उसे बचाने के लिए पानी में कूद पड़ी पर स्वयं भी बह गई। कुछ महिलाओं द्वारा की गई चीख पुकार को सुन कर 19 वर्षीय भालचन्द्र किसन काटे ने देखा कि दोनों लड़कियां 40 से 50 फीट की दूरी पर तेज धारा में बही जा रही हैं। वे कपड़ों सहित नदी में एकदम कूद पड़े और उन्हें बचा लिया। अभी केवल किशोरावस्था के होने के बावजूद श्री काटे ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए दो प्राणियों को डूबने से बचाने में निःस्वार्थ साहस एवं अद्वितीय सूझ-बूझ का परिचय दिया।

5. श्री चानन सिंह (जी० सं० 106771),
सहायक चार्जमैन,
ग्राम तथा डाकघर: बागली कलां,
जिला लुधियाना (पंजाब)।

दिनांक 24 जनवरी, 1970 को करीब सायं 6-30 बजे भारत-सिक्किम सीमा पर ऋषि पुल स्थल के समीप एक जबरदस्त और अप्रत्याशित भू-स्खलन हुआ जिसमें एक अधिकारी और 29 "ग्रेफ" पाइनियर मारे गये और एक अधिकारी और 25 "ग्रेफ" पाइनियर गम्भीर रूप से घायल हो गये। वे सभी मलवे के नीचे दब गये।

सैकिन्ड लफ्टिनेन्ट एच० एस० खारा एस० एस०-21056 के नेतृत्व में एक बचाव दल फौरन घटना स्थल पर पहुंचा और उसने तत्काल बचाव कार्य आरम्भ कर दिये। सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट खारा के अधीन कार्य कर रहे सहायक चार्जमैन, श्री चानन सिंह जी-सं० 106771 खतरा उठाते हुए और अपनी निजी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए बचाव कार्य में लगे हुए व्यक्तियों में विश्वास पैदा करते रहे। बचावकार्य अभी चल ही रहे थे कि अत्याधिक अंधेरा हो गया क्योंकि उस स्थल की रोशनी की व्यवस्था भू-स्खलन से छिन्न भिन्न हो चुकी थी। भू-स्खलन जारी था और बचावदल पर लगातार खतरा बना हुआ था क्योंकि उस भू-स्खलन से पत्थर और मिट्टी नीचे खिसक रही थी। इसके बावजूद भी बचाव दल मलबे में दबे हुए सभी व्यक्तियों को बाहर निकालने में और घायलों के लिए चिकित्सा व्यवस्था करने में सफल रहा। सम्पूर्ण बचाव कार्य के दौरान श्री चानन सिंह ने अपने जीवन को गम्भीर संकट में डाला। यह उन्हीं के साहस और उत्साह शील प्रयत्नों का परिणाम था कि भू-स्खलन के नीचे दबे हुए व्यक्तियों को जीवित निकाला जा सका।

6. श्री तारा चन्द,
ग्राम सलहर,
तहसील: रणबीर सिंह पुरा,
जम्मू।

दिनांक 24 दिसम्बर, 1971 को श्री दीवान चन्द और उनके परिवार के सदस्यों ने, जो तांगे में सवार होकर अपने गांव वापिस आ रहे थे, ग्राम जगतू-चक और पासगल के बीच जी० आर० 007294 से छोटा रास्ता अपनाया, जहांकि भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान सामरिक आवश्यकता के कारण कई अन्य स्थानों सहित सुरंगे बिछाई गई थी। वह तांगा एक टैंक भेदी सुरंग से गुजरा और उसके परिणामस्वरूप होने वाले विस्फोट में सभी चारों सवार गम्भीर रूप से घायल हो गये।

श्री तारा चन्द ने, जो कि संयोग से वहां आ पहुंचे, उन घायल व्यक्तियों की करुणाजनक स्थिति देखी। उन्होंने बचाव का प्रबन्ध करने चाहे किन्तु उन्हें स्थानीय व्यक्तियों द्वारा चेतावनी दी गई कि उनके भी विस्फोट से टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे। अपनी जान को खतरे की परवाह न करते हुए श्री तारा चन्द उन घायलों को निकालने के लिए चार बार अकेले उस सुरंग-क्षेत्र में गये और उन्होंने पहले दोनों बच्चों को, उसके बाद उनके माता-पिता को बारी बारी करके बाहर निकाला। माता-पिता की बाद में मृत्यु हो गई किन्तु उन दो बच्चों के प्राण बचा लिए गये। श्री तारा चन्द ने दूसरों की जाने बचाने के लिए अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए उत्कृष्ट और असाधारण साहस का परिचय दिया।

7. कुमारी मेरीकुट्टी मैथ्यु (मौली कुट्टी),
सचागाथिल कौरत्ती,
कांजीराप्पली, जिला कोट्टयाम (केरल)।

29 मार्च, 1972 को 9 वर्षीय शीला, कोरत्ती के समीप कट्टीकायम में मणिमाला नदी में स्नान करते हुए अचानक ही तेज धारा में फंस गई और गहरे पानी में बह गई। अपने प्राण बचाने के लिए प्रयत्न करती हुई नन्ही बालिका को देखकर उसकी बड़ी बहन 12 वर्षीय बालसम्मा नदी में कूद पड़ी और शीला को पकड़ लिया किन्तु उसे बचाने में असफल रही। 15 वर्षीय तरस्यामा नामक एक अन्य लड़की ने जब यह भयानक दृश्य देखा तो वह उन्हें बचाने

के लिए नदी में कूद पड़ी किन्तु जब दोनों लड़कियों ने उसे पकड़ लिया तो तीनों की तीनों डूबने लगीं । दुर्घटना स्थल पर पानी करीब दस-बारह फुट गहरा था । उनके चीत्कार को सुनकर 18 वर्षीय कुमारी मेरीकुट्टी मैथ्यू (मौली कुट्टी) उस नदी में कूद पड़ीं, हालां कि अन्य व्यक्तियों ने उन्हें चेतावनी दी थी कि इस कार्य में जान का खतरा है । उन्होंने पानी में गोता लगाया और तीनों लड़कियों को नदी तट तक ले आने में सफल हुई । ये लड़कियां बेहोश हो गई थी और वहां एकत्रित लोगों द्वारा उनका प्राथमिक-चिकित्सा उपचार किये जाने के बाद ही वे होश में आईं । कुमारी मेरी कुट्टी मैथ्यू (मौली कुट्टी) ने अपने जीवन को भारी संकट में डालते हुए, तीन प्राणियों को डूबने से बचाने में असाधारण साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

8. श्री कालीगिथी कोटेश्वर राव, **(मरणोपरान्त)**
उण्डी, भीमराव तालुक,
जिला : वेस्ट गोदावरी,
आन्ध्र प्रदेश ।

4 अगस्त, 1972 को करीब 11 बजे सुबह पालाककोडे गांव की श्रीमती आप्पला नारसम्पा ने आत्म हत्या करने के इरादे से भीमवरम शहर के रेलवे पुल से येनमदुरु नाले में छलांग लगाई । नाले में उस महिला को बहते हुए देखकर 27 वर्षीय श्री कालीगिथी कोटेश्वर राव उसे बचाने के लिए तत्काल नाले में कूद पड़ा । इस कार्यवाही में श्री राव अपनी जान तक गवां बैठे । श्रीमती अप्पाला नारसम्पा के प्राण बचाने के प्रयत्न में श्री कालीगिथी कोटेश्वर राव ने अनुकरणीय साहस और जनहित की भावना का प्रदर्शन किया ।

9. श्री मोतीराम आत्माराम मानकर,
रेलवे गेटमैन, रेलवे स्टेशन यवतमाल,
यवतमाल, महाराष्ट्र ।

10. श्रीमती जशोदा बाई,
द्वारा श्री साहू गणपत राउत,
रेलवे, गेटमैन, रेलवे स्टेशन, यवतपाल,
यवतपाल, महाराष्ट्र ।

श्री मोतीराम आत्माराम मानकर, गेटमैन ने जो 12 फरवरी, 1970 को डूंगरपुर रेलवे स्टेशन के फाटक पर ड्यूटी पर थे, करीब 16-30 बजे, रेलवे गेट बन्द किया और यवतमाल रेलवे स्टेशन से आने वाली रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे । इस लेवल क्रासिंग से गुजरने वाली यवतमालल में से अमरावती जाने वाली सड़क करीब डेढ़ फर्लांग तक लगातार ढलान वाली है, जो इस लेवल क्रासिंग और उसमें भी नीचे तक है । करीब 16.45 बजे यवतमाल, से अमरावती जाने वाली 62 यात्रियों से भरी राज्य परिवहन की एक बस सं० एम० आर० आर० 6356 इस लेवल क्रासिंग पर पहुंची और गेट पर टकराने के बाद रेल की पटरी पर रुक गई । तब तक उक्त रेलगाड़ी जो यवतमाल रेलवे स्टेशन से चल चुकी थी इस लेवल क्रासिंग से केवल लगभग 200 फुट की दूरी पर पहुंच चुकी थी । श्रीमानकर ने स्थिति की गम्भीरता को समझा और लाल झंडी हिलाते हुए आती हुई रेलगाड़ी की ओर भागे ताकि उसे रुकाया जा सके । उनके पीछे-पीछे एक दूसरे गेटमैन की पत्नी श्रीमती जशोदाबाई भी इसी उद्देश्य से भागती हुई उस ओर गई । चूंकि रेलगाड़ी पहले से ही तेज गति से चल रही थी, इसलिए इंजिन ड्राइवर का ध्यान आकृष्ट करने के लिए उन्हें जोर से चिल्लाना पड़ा । सौभाग्य से उस ड्राइवर ने उनका चिल्लाना सुन लिया और उसने ब्रेकें लगाईं । रेलगाड़ी रेल पटरी पर खड़ी हुई राज्य परिवहन की बस को मामूली से धकेलने के पश्चात रुक गई । यात्रियों या जनता में से कोई भी घायल नहीं हुआ । इस बचाव कार्य में श्री मानकर और श्रीमती जशोदा बाई को कोई चोटें नहीं आईं । इस संकट उक्त कालीन परिस्थिति में उन्होंने अत्यधिक साहस तत्परता और सूझ-बूझ से कार्य किया और अपने प्राणों को संकट में डालते हुए रेलगाड़ी तथा बस के मध्य भिड़न्त को रोका और इस प्रकार उस बस के यात्रियों को जो काफी बड़ी संख्या में थे मरने या घायल होने से बचाया ।

11. श्री कल्याण सिंह,
नारायण गढ़, तहसील कर्ण प्रयाग,
जिला चमोली, उत्तर प्रदेश ।

20 अप्रैल, 1972 को 15 वर्षीय श्रीराम सिंह स्नान करते समय पिंडर नदी में फिसल गये और उसकी तेज धारा में बह गये । उसे बहते हुए देखकर श्री महावीर सिंह रावत ने सहायता के लिए शोर मचाया और इससे उस नदी के किनारे कुछ अन्य व्यक्ति एकत्रित हो गये । तब तक वह लड़का 200 मीटर से अधिक दूर नारायण गढ़ ब्लाक कालोनी की ओर बह गया था । इत्फाक से श्री कल्याण सिंह भी वहां उपस्थित थे जिन्होंने डूबते हुए लड़के को देखा । वह कपड़ों समेत नदी में कूद पड़े और लड़के को किनारे तक लाने में सफल हुए । नदी के जिस स्थान से श्री कल्याण सिंह ने लड़के को बचाया वह स्थान 3 मीटर से अधिक गहरा और 50 मीटर से अधिक चौड़ा था । पानी बहुत ठंडा था और धारा बहुत तेज थी । इन कठिनाइयों के बावजूद श्री कल्याण सिंह ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए उस लड़के के प्राण बचाने में असाधारण साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

12. श्री बी० राजा रेड्डी,
कल्याण खानी सं० 1, इन्कलाइन,
मण्डमरी डिवीजन, सिगरेनी कोलियरीज कम्पनी लिमिटेड,
पो० आ० कोठगुडीयम कोलियरीज,
भद्राचलम रोड स्टेशन,
आन्ध्र प्रदेश ।

6 जनवरी, 1972 को प्रथम पारी के दौरान कल्याण खानी सं० 1 इन्कालाइन, मण्डमरी डिवीजन में तब एक गम्भीर दुर्घटना हुई जब शाट-फायर श्री जुपाका पोशाम, एक शिला के नीचे फंस गये जो कि उनके ऊपर गिर गई थी । कोल कट्टर श्री बी० राजा रेड्डी जो दुर्घटना स्थल से करीब 33 मीटर की दूरी पर थे, दुर्घटना स्थल पर गये और श्री जुपाका पोशाम को गिरी हुई शिला के नीचे से बाहर निकाला और उन्हें एक सुरक्षित दूरी तक ले गये, हालांकि दो शाट्स को आग लग चुकी थी और उनकी जान खतरे में पड़ सकती थी अगर वे उस समय फट जाते जब वे श्री जुपाका पोशाम को बचा रहे थे । श्री रेड्डी ने अपने प्राणों को अत्यधिक खतरा होने की परिस्थितियों में भी, अपने सह-श्रमिक को बचाने में असाधारण साहस और उच्चकोटि के उत्तरदायित्व की भावना का प्रदर्शन किया ।

13. श्रीमती मिनाती संतरा,
द्वारा श्री भजहरी संतरा,
ग्राम जयनगर, डाकघर गौरांगचेक,
थाना: उदयनारायणपुर,
जिला: हावड़ा, पश्चिम बंगाल।

जुलाई, 1972 के अन्तिम सप्ताह में जयनगर के हरु संतरा, तापसी संतरा और धन्नय् संतरा नामक तीन बच्चे दामोदर नदी में स्नान करते समय अचानक गहरे पानी में फिसल गये। वे एक दूसरे के बाजुओं को पकड़े हुए नदी से बाहर आने के प्रयत्न करते रहे। धन्नय् संतरा की माता श्रीमती अबी संतरा, बच्चों को जलधारा में बहते हुए देखकर गहरे पानी में कूद पड़ी, बच्चों को पकड़ा किन्तु बाहर न आ सकी क्योंकि धारा का प्रवाह प्रबल था। श्रीमती मिनाती संतरा जिन्होंने अचानक देखा कि भंवरदार जलधारा उन्हें बहाकर ले जा रही है तो वे नदी में कूद पड़ीं और उन्हें सुरक्षित नदी के किनारे ले आई। अपनी जान को गम्भीर खतरा होते हुए भी उन्होंने चार व्यक्तियों को बचाने में प्रशंसनीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

14. श्री सुधीर कुमार **(मरणोपरान्त)**
सुपुत्र डाकटर सत्यपाल गुप्ता,
कोटली कालोनी,
रेहारी, जम्मू।

जसजीत सिंह, सुधीर कुमार और वीरेन्द्र सिंह नामक तीन लड़के कपूरथला में रेल पटरी के साथ साथ चल रहे थे। जसजीत सिंह बीच में थे, सुधीर कुमार उसके दायीं ओर और वीरेन्द्र सिंह बायीं ओर थे। वे बात चीत में व्यस्त थे और पीछे से आ रही रेलगाड़ी के बारे में अनभिज्ञ थे। जब रेल गाड़ी उन से केवल 6 गज की दूरी पर रह गई थी तो सबसे पहले वीरेन्द्र सिंह ने अचानक रेलगाड़ी को देखा। वह रेल-पटरी के बाईं ओर कूद गया और अपने आप को बचा लिया। सुधीर कुमार भी दाईं ओर को कूद पड़े, जबकि जसजीत सिंह अभी रेलवे पटरी पर ही था और कूदने का प्रयत्न भी किया किन्तु गिर पड़ा। सुधीर कुमार जसजीत सिंह को पटरी से बाहर खींचने के लिए एक दम रेल पटरी पर गये, परन्तु इसी प्रक्रिया में उन्हें रेलगाड़ी से टक्कर लग गई और जसजीत सिंह सहित उनकी मृत्यु हो गई।

श्री सुधीर कुमार ने अपने साथी को बचाने के प्रयत्न में अपने प्राणों का बलिदान किया और इसके द्वारा साहस और बहादुरी का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया।

अशोक मित्र, राष्ट्रपति के सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 17 दिसम्बर 1973

सं० 88-प्रेज०/73—निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन को गंभीर संकट पूर्ण परिस्थितियों में डालते हुए जीवन रक्षा कार्य में उल्लेखनीय साहस का परिचय दिए जाने के लिए, राष्ट्रपति उन्हें जीवन रक्षा पदक सहर्ष प्रदान करने की स्वीकृति देते हैं:—

1. श्रीमती कावेरीबाई,
कारवार, जिला नार्थ कनारा,
कर्नाटिक।

23 नवम्बर, 1971 को कारवार शहर में कोडी बाग नामक क्षेत्र में एक जंगली भैंस ने एक साइकिल सवार का जिस के कैरियर पर तीन वर्षीय बच्चा भी बैठा हुआ था, पीछा किया। साइकिल सवार डर गया और अपने आप को उस खतरे से बचाने की खातिर, वह सड़क के किनारे एक कुएं की ओर बढ़ा। जब उसने अचानक साइकिल को ब्रेक लगाई तो कैरियर पर बैठा बच्चा कुएं में जा गिरा। साइकिल सवार सहायता के लिए चिल्लाया। इसे सुनकर श्रीमती कावेरी बाई घटना स्थल की ओर दौड़ी आई। अपने जीवन की परवाह किये बिना वह कुएं में कूद पड़ी और बच्चे को बचा लिया। श्रीमती कावेरी बाई ने इस बच्चे का जीवन बचाने में उत्कृष्ट साहस और सूझ बूझ का परिचय दिया।

2. कुमार देवी दास शंकर दिवकर,
स्थान एवं डाकखाना रामराज, तहसील अलीबाग,
जिला कोलाबा, महाराष्ट्र।

12 अगस्त, 1970 को 10 वर्षीय ग्वाला कुमार राम चन्द्र नारायण वेटकोली, कोलाबा जिले में रामराज गांव के निकट जब नदी पार कर रहा था तो उस समय नदी में पानी का स्तर मुश्किल से 6 से 10 फीट गहरा था। धारा के उद्गम की ओर से अचानक पानी का बहाव तेज हो गया और पानी का स्तर बढ़ कर 15 से 20 फीट हो गया। बालक लगभग नदी में बह जाने को था कि नदी के किनारे बैठी कुछ महिलाओं ने इस लड़के को बचाने के लिये शोर मचाना शुरू कर दिया। इस शोर को सुनकर 15 वर्षीय बालक कुमार देवीदस शंकर दिवकर घटनास्थल की ओर भागा और पलभर की भी देर किये बिना नदी में कूद पड़ा। अच्छा खासा फासला तैरने के पश्चात् एवं भरसक प्रयत्नों के फलस्वरूप वह डूबते हुए लड़के के पास जा पहुंचा और उसे नदी के किनारे पर जीवित वापिस लाने में सफल हुआ।

कुमार देवीदास शंकर दिवकर ने कुमार रामचन्द्र नारायण वेटकोली की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और सूझ बूझ का परिचय दिया।

3. श्री तोम्मनमाट्टाथिल कुमारन राजू
करपूजा वीडू, वेल्लाप्पडो,
पलाई, केरल।

7 फरवरी, 1971 को प्रातः लगभग 10.30 बजे सेंट विनसेंट इंगलिश मीडियम हाई स्कूल, पलाई, का विद्यार्थी कृष्ण कुमार अपने मित्रों सहित मीनाचिल नदी में पलाई चर्च स्थान घाट पर नहा रहा था कि अचानक नदी में फिसल गया। लड़के को अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करता देख कर गवर्नमेंट हाई स्कूल, पलाई के विद्यार्थी, 18 वर्षीय श्री टी० के० राजू जो कि पास ही खड़े थे, अपनी जान की परवाह किये बिना, नदी में कूद पड़े और गहरे पानी से कृष्ण कुमार को खींच कर बाहर निकाल कर

बचा लिया । यदि श्री राजू समय पर उक्त साहसपूर्ण कार्य न करते तो श्री कृष्ण कुमार, नदी में अवश्य डूब गया होता । श्री टी० के० राजू ने अपने साथी विद्यार्थी की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

4. श्री दत्तात्रेय राम मगडुम,
डाकखाना अर्जुन वाडा, तालुका शिरोली,
जिला कोल्हापुर, महाराष्ट्र ।

31 अगस्त, 1970 को श्री दत्तात्रेय राम मगडुम कृष्णा नदी के, मिराज गाव की तरफ वाले किनारे पर लगे वार्षिक मेले (अन्ना बावा) में एक किश्ती में 35-40 अन्य व्यक्तियों के साथ, अर्जुनवाडा वापिस लौट रहे थे । अचानक किश्ती पर बैठे हुए व्यक्तियों ने लोगों को चिल्लाते हुए सुना और नदी के तेज बहाव में एक लड़के को बहते हुए देखा । श्री मगडुम नदी में कूद पड़े और डूबते हुए लड़के का हाथ पकड़ लिया । उन्होंने लड़के को नदी के तेज बहाव में डूबने से बचा लिया और उसे नदी के किनारे पर ले आये ।

पुनः 28 अक्तूबर, 1971 को 17 वर्षीय शाबिर हुसैन मजावर, कृष्णा नदी में नहाते समय डूबता हुआ पाया गया । चारों ओर से लोगों की, सहायता के लिये चिल्लाने की आवाजें सुनते ही, श्री मगडुम जो कि थोड़ी दूरी पर एक किश्ती में बैठे हुए थे, नदी में कूद पड़े और शाबिर हुसैन को डूबने से बचा लिया । अपनी तबीयत उस समय ठीक न होते हुए भी, श्री मगडुम ने एक नागरिक बन्धु को बचाने में सराहनीय तत्परता का परिचय दिया ।

5. श्री जयसिंहराव अन्नासाहब भोंसले,
701 गोखले नगर, पुने सिटी,
महाराष्ट्र ।

25 फरवरी, 1971 को श्री जयसिंहराव अन्नासाहब भोंसले श्री लक्ष्मण रघुनाथ जबलेकर के साथ टहलने के लिए निकले । उन्होंने निकट के एक कुएं से, जोकि प्रयोग में नहीं आ रहा था, कराहने की आवाज आती हुई सुनी और जब उन्होंने कुएं के अन्दर झांका तो उन्हें दिखाई दिया कि कुएं के अन्दर कोई है । श्री भोंसले को निकट के वृक्ष से बंधी एक रस्सी मिल गई । श्री भोंसले, रस्सी लेकर अपने साथी जबलेकर और हटमेन्ट में रहने वाले एक व्यक्ति के साथ कुएं की ओर गये । रस्सी का एक सिरा स्वयं पकड़ कर और अन्य दो व्यक्तियों से रस्सी का दूसरा सिरा पकड़े रखने को कह कर वह कुएं में उतर गये जो कि 25 फीट गहरा था । कुएं के पानी में पहुंचने पर, उन्होंने डूबते हुए व्यक्ति को बाजू से पकड़ लिया और ऊपर खड़े अपने साथियों से उसे बाहर खींच निकालने के लिये जोर से आवाजें दीं । किन्तु इस बीच स्वयं उनकी पकड़ छूट गई और कुएं में गिर पड़े । श्री भोंसले ने बाहर वालों से रस्सी नीचे फैंकने के लिये कहा । डूबने वाले व्यक्ति, जोकि एक महिला थी, समेत उन्हें खींच कर बाहर निकाला गया । महिला अचेत अवस्था में थी । श्री भोंसले ने उसका तत्काल प्रथम उपचार किया और इसके परिणाम स्वरूप उसे होश आ गया ।

श्री जयसिंह राव अन्नासाहब भोंसले ने अपनी सुरक्षा का विचार किये बिना, महिला को बचाने में उच्च कोटि के असाधारण साहस का परिचय दिया और उच्च नागरिक भावना का भी प्रदर्शन किया ।

6. श्री वासुदेव ढोंडुशेत बाघ,
मकान नं० 1960, सोमवार पेठ,
नासिक, महाराष्ट्र ।

नासिक में 27 जुलाई, 1971 को सायं लगभग चार बजे कुछ बच्चे एक मकान की सीढ़ियों पर खेल रहे थे । उन्होंने एक खुले लोहे के स्प्रिंग के एक सिरे को सीढ़ियों में लगी बिजली के एक गरम तार के साथ बांध दिया और दूसरा सिरा एक दरवाजे की एक चिटकिनी के साथ बांध दिया । इस तार के साथ खेलते हुए उनमें से मीना मनोहर पवार नामक लड़की को बिजली के झटके लगने से मृत्यु हो गई । श्री वासुदेव ढोंडुशेत बाघ ने जो कि मकान के प्रथम तल पर थे, 25 फीट नीचे छलांग लगाई और मेन फ्रन्ट का स्विच बन्द कर दिया और इस प्रकार उन्होंने अन्य तीन बच्चों की जानें बचाईं अन्यथा उन की भी बिजली के करन्ट से मृत्यु हो जाती ।

श्री वासुदेव ढोंडुशेत बाघ ने अपने को गम्भीर शारीरिक खतरे की परिस्थितियों में डाल कर इन तीन बच्चों की जान बचाने में उदाहरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दि ।

7. श्री बिट्टालाल गोपीनाथ,
तिप्तुर, जिला तुमकुर,
कर्नाटक ।

तिप्तुर के जमींदार श्री नवरेकर सुब्बा राव का बंगलोर में 25 जनवरी, 1970 को देहांत हो गया । इस दुःखद समाचार को सुनते ही उनकी पत्नी ने शोकातुर होकर घर के आंगन में स्थित कुएं में छलांग लगा दी । उसी समय, 19 वर्षीय श्री बिट्टालाल गोपीनाथ संयोग से वहां जा पहुंचे । जब उन्हें इस घटना के बारे में बताया गया तो वह कपड़ों समेत कुएं में कूद पड़े और अपने एक हाथ में महिला को बालों से पकड़ लिया और अपनी टांग की सहायता से उसके शरीर को ऊपर उठाया, ताकि वह कुएं के पानी में डूब न जाये । बाद में अन्य लोगों की सहायता से उस महिला को कुएं से बाहर निकाल लिया गया । इस प्रकार श्री गोपीनाथ द्वारा अपनी जान के खतरे की बिल्कुल परवाह न कर शीघ्र कार्यवाई करने के फलस्वरूप उक्त महिला डूबने से बच गई ।

8. श्री वीरनागय्या,
पुलिस कांस्टेबल स० 1272,
सिटी आर्मड रिजर्व पुलिस,
बंगलौर शहर, कर्नाटक ।

8 जुलाई, 1971 को जब श्री वीरनागेय्या, पुलिस कांस्टेबल स० 1272, जो उस समय ड्यूटी पर नहीं थे, रात लगभग 11 बजे घर वापिस आ रहे थे तो उन्होंने एक 13 वर्षीय लड़की को अचानक कुंए में गिरते हुए देखा । वह कुंए की ओर भागे और पानी में लड़की को अपने को बचाने के लिए संघर्ष करते देखा । बिना समय खोये वे कुंए में कूद पड़े और लड़की को पकड़ लिया और तैर कर कुंए के उस तरफ लाये जहां पर लोहे की सीढ़ी लगी हुई थी । इस के पश्चात् वे लड़की को उठाकर कुंए में बाहर ले आये जहां पर उसका प्रथम

उपचार किया गया। बाद में लड़की को हस्पताल ले जाया गया जहां पर वह तीन दिन के इलाज से ठीक हो गई। श्री वीरनागेय्या ने लड़की को बचाने में बड़े साहस और सूझ-बूझ से काम लिया।

9. श्री एम० काथन,
डाकखाना अचम्पूथ,
जिला मदुरै, तमिलनाडु।

10. श्री चेल्लियाह,
ग्राम नरसिंगम,
डाकखाना औथकदै के नजदीक,
जिला मदुरै, तमिलनाडु।

बैगै जलाशय के जलग्रहण क्षेत्र में भारी वर्षा के कारण 16 दिसम्बर, 1971 को रात को मदुरै में नदी में बाढ़ आ गई। नदी के किनारे तथा अन्य निचले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से अपनी झोपड़ियां खाली करके चले जाने को कहा गया। जो लोग अपनी झोपड़ियां छोड़कर नहीं गए वे 16 दिसम्बर, 1971 की रात को बाढ़ का पानी अचानक बाढ़ जाने से बाढ़ में फंस गये। मदुरै शहर की समस्त पुलिस एकत्रित की गई और उन्होंने राजस्व और निगम के अधिकारियों तथा अग्निशमन सेवा के कर्मचारियों की मदद से 17 दिसम्बर, 1971 की सुबह से ही बचाव-कार्य प्रारम्भ कर दिए। कृषि विमानन लिमिटेड, बम्बई का हैलिकोप्टर, जो तिरूचिरापल्ली में था, मंगाया गया, परन्तु बचाव कार्य में हैलिकोप्टर के साथ एक दुर्घटना हुई तथा वह बाढ़ के पानी में गिर गया। हैलिकोप्टर चालक बाहर निकला तथा उसने बाढ़ युक्त नदी तैरकर पार की परन्तु कुरूवैकरनसलै में नदी में नाले के किनारे फंस गया। नदी की तेज धारा के कारण किसी ने भी हैलिकोप्टर चालक को बचाने के लिए नदी पार करने का साहस नहीं किया। ऐसी घड़ी में सर्वश्री एम० काथन और चेल्लियाह आगे आये और वे रबड़ की ट्यूबों तथा रस्सियों की मदद से तीव्र धारा में तैरे और हैलिकोप्टर चालक को बचाया।

नौ सेना का एक हैलिकोप्टर जो कोचीन से मंगाया गाया, 18 दिसम्बर, 1971 को वहां पहुंचा और जब पानी का स्तर घट रहा था तब उसने बचाव-कार्य प्रारम्भ किया। नदी में कांटेदार झाड़ियों के कारण रात्रि में बचाव कार्य करना कठिन हो गया। सर्वश्री एम० काथन तथा चैल्लियाह अपनी पगड़ियों में बंधी बैटरियों की रोशनी में नदी में कूद पड़े और तैर कर तीव्र धारा पार की और बाढ़ में फंसे हुए बहुत से लोगों को बचाया। बचाए गए 18 लोगों में से 10 लोगों को सर्वश्री काथन और चैल्लियाह ने बचाया। इन दोनों व्यक्तियों ने बचाव कार्य के लिए खतरे से भरी परिस्थितियों में सराहनीय साहस दिखाया।

11. श्री यशपाल स्याल, जी/11538,
मकान सं० 7312,
फिल्लौर, पंजाब।

20 जुलाई, 1970 को लगातार होती भारी वर्षा के कारण अलकनंदा तथा उसकी सहायक नदियों में अभूतपूर्व बाढ़ आई, जिससे ऋषिकेश, जोशीमठ-बद्रीनाथ और जोशीमठ-मलारी सड़कों को काफी क्षति पहुंची। इन दोनों सड़कों में संचार पद्धति पूर्णरूप से ठप हो गई तथा स्थिति को पूर्वावस्था में लाने के लिए आवश्यक साधन जुटाना भारी समस्या बन गई। 30 जुलाई, 1970 को 21 बी० आर० टी० एफ० के मुख्यालय के ए० ई० श्री आर० डी० सकलानी तथा 155 कन्स्ट्रक्शन कम्पनी के 3, आर० एम० यू० के० बी०/आर० आई० के अधीक्षक श्री यशपाल स्याल, सी० पी० के मजदूरों सहित जोशीमठ की ओर जा रहे थे। धाक नाले पर एक पैदल पुल पार करते समय, पुल के ऊपर अचानक पानी बढ़ जाने से श्री सकलानी फिसल कर नाले में जा गिरे तथा तेज धारा उनको लगभग 30 फीट बहा ले गई और असल में वे डूब चुके थे। श्री स्याल नाले में होकर दौड़े और अपनी रक्षा की परवाह किए बिना धारा में कूद पड़े और श्री सकलानी को बाहर खींच लाए। यद्यपि श्री स्याल लुढ़कते हुए पत्थरों से टकराए और उनको चोटें आई, परन्तु वे श्री सकलानी को बचाने में सफल हुए।

जिन परिस्थितियों में श्री यशपाल स्याल को गहरी शारीरिक चोटें आई, उनमें उन्होंने अपने साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

12. श्री नोल्लू पोलियाह,
खलासी ग्रेड-II, डेकिंग फोरमैन सैक्शन,
मैरिन डिपार्टमैंट, पोर्ट ट्रस्ट,
विशाखापटनम।

29 अक्टूबर, 1971 को तूफानी मौसम के बावजूद, विशाखापटनम के बाहरी बन्दरगाह परियोजना के बार्ज बर्थ II से निकाले हुए पदार्थ (समुद्री कीचड़, आदि) को डलाव में डोलने के लिए होप्पन बार्ज "कैलाश" समुद्र में ले जाया गया। जब उक्त पदार्थ डाला जा रहा था, दो खलासी, सर्व श्री के० चौ० अप्पालानायडू और के० थाटराव दुर्घटना ग्रहत हो गए और खाड़ी में तूफानी मौसम तथा पानी बढ़ जाने के कारण होप्पन बार्ज से गिर पड़े। श्री नोल्लू पोलियाह जो उस समय बार्ज में थे, शीघ्र पानी में कूद पड़े और श्री के० चौ० अप्पलानायडू को, जो कि डूबने ही वाले थे, बचाया। श्री के० थाटराव, जिनको कोई भी चोट नहीं आई, तैर कर किनारे पर पहुंच गए।

अपने साहसपूर्ण कार्य से श्री नोल्लू पोलियाह ने अपने साथी के प्राण ही नहीं बचाए, बल्कि अपने प्राणों की परवाह न करके कर्त्तव्य-परायणता का एक उदाहरण भी पेश किया।

13. श्री ध्रुब सिंह,
अधीक्षक
कोल्ड रोलिंग मिल्स, राऊरकेला स्टील प्लांट,
राऊरकेला, उड़ीसा।

22 जुलाई, 1970 को जब यांत्रिक (मेकेनिकल) कर्मचारी एक क्षतिग्रहत नल (पाइप) को काट रहे थे तो राऊरकेला स्टील प्लांट के कोल्ड रोलिंग मिल्स के हौट डिप टिनिंग लाइन्स के तहखाने में तेल से भीगी दीवारों पर भयंकर आग लग गई, जिससे पाम आयल के टैंक, गैस-पाइप, बिजली के तार (केबल) और यांत्रिक (मैकेनिकल) तथा बिजली (इलैक्ट्रिकल) के उपकरणों से भरे उस पूरे क्षेत्र को आग ने घेर लिया। वहां कम दिखाई देने तथा विस्फोट होने के खतरे के कारण स्वयं को अधिक खतरा होने पर भी, श्री ध्रुब सिंह बड़ी तत्परता तथा सूझ-बूझ के साथ गैस वलवों को बन्द करने तथा बिजली के बटन (स्विच) को बन्द करने में सफल हुए। घना धुंआ छाए

रहने पर भी वे अग्नि-शमन-कर्मचारियों के साथ सीढ़ियों से होकर तहखाने में आधे रास्ते तक गए तथा उनको आग और न बढ़ने देने के उपयुक्त तरीके बताए। यदि एक क्षण की भी देर हो जाती तो वहां विस्फोट हो जाता। श्री ध्रुबसिंह ने अपने साहस तथा सूझ-बूझ से सभी लोगों का मार्ग-दर्शन किया तथा उनको उत्साहित किया। वे पानी के होज पाइप (किरमिच की नली) को स्वयं ताड़ के तेल के टैंकों के ठीक ऊपर के छेद से आग की तरफ ले गए इस प्रकार आग को ताड़ के तेल के टैंकों तक नहीं पहुंचने दिया। उन्होंने 20 व्यक्तियों, कीमती उपकरणों तथा अन्य ऐसी सामग्री को बचाया, जिनके न बचने पर हॉट डिप टिनिंग लाइंस के उत्पादन को नुकसान पहुंचता और लगभग 15 करोड़ रूपये का घाटा होता।

14. श्री मुनीर अहमद भट,
अप्रैंटिस इंजीनियर,
सिंचाई तथा बाढ़ नियंत्रण विभाग,
जम्मू व कश्मीर सरकार,

13 फरवरी, 1972 को जल स्रोत तथा विकास प्रशिक्षण केन्द्र, रुड़की विश्वविद्यालय के प्रशिक्षार्थी अधिकारी दो दलों में इचारी बांध (यमुना योजना) देखने गए। जब एक दल जल प्रवेश स्थान (इनटेक) से बाहर निकला और दूसरा दल उसे देखने जा रहा था तो इराक से आए हुए एक अतिथि प्रशिक्षार्थी श्री एच० ए० अल-शमी, डर्सिल्टिंग टनल के प्रथम होप्पर में फिसलकर गिर पड़े। श्री शमी को डूबने से बचने के लिए संघर्ष करते हुए देख कर अन्य प्रशिक्षार्थियों ने शोर मचाया। श्री मुनीर अहमद भट ने हल्ला सुना और वे तुरन्त घटनास्थल पर पहुंचे। श्री शमी डूबने ही वाले थे कि श्री मुनीर अहमद भट अपनी रक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए, होप्पर में खूद पड़े और श्री शमी को अपने साथ तैरते रहने के लिए उत्साहित किया। कुछ ही मिनटों के बाद जल प्रवेश स्थान (इनटेक) में एक रस्सी फैंकी गई और उन दोनों को बचा लिया गया। श्री भट ने प्रशिक्षार्थी को बचाने के लिए जा कर उल्लेखनीय साहस का परिचय दिया।

15. मास्टर एरूथाट्टिल सुब्रमणियन,
इचम्पथूर, चुन्नेरा ग्राम,
एनडि तालुक,
जिला मलाप्पुरम, केरल।

19 दिसम्बर, 1971 को 24 वर्षीय कुरिपकिल कुन्हू तथा उनका 11 वर्षीय भाई रवीन्द्रन नामक दो मजदूर चुन्गथरा ग्राम में इंचप्पथूर मंदिर की झील में स्नान करते समय अचानक गहरे पानी में फिसल पड़े और डूबने ही वाले थे। जो तीन आदमी उन्हें बचाने के लिए गए वे भी डूबने लगे क्यों कि उनमें से किसी को भी तैरना नहीं आता था। वहां बहुत से लोग जमा हो गए जो कि बेबसी के साथ देखते रहे जबकि 14 वर्षीय मास्टर एरूथाट्टिल सुब्रमणियन अचानक पानी में कूद पड़े और एक बांस के डंडे की मदद से तीन व्यक्तियों को बचाया तथा शेष लोगों को कुछ अन्य व्यक्तियों ने बचाया। तथापि कुरिपकिल कुन्हू और रवीन्द्रन को अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही मृत्यु हो गई। यदि मास्टर सुब्रमणियन ठीक समय पर बचाव कार्य नहीं करते तो मृतकों की संख्या पांच तक पहुंच जाती। मास्टर एरूथाट्टिल सुब्रमणियन ने अपनी जिन्दगी को खतरे में डालकर 3 व्यक्तियों की जिन्दगी बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

16. श्री परमेश्वर नारायण भट,
हरीगर ग्राम, सिद्दपुर तालुक
जिला उत्तरी कनारा, कर्नाटक।

17 जुलाई 1972 को लगभग 12 बजे दिन में सिद्दपुर तालुक में हरीगर ग्राम के ही कोलिकट्टु नामक एक छोटे ग्राम में एक बड़ी फूंस की झोंपड़ी में, जिसमें 6 परिवार रहते थे अचानक आग लग गई। घरों के स्वस्थ व्यक्ति तो बाहर थे किन्तु एक बूढ़ी लंगड़ी औरत तथा पालने में दो बच्चों के अतिरिक्त सभी औरतें तथा बच्चे जलती हुई झोंपड़ी से बाहर निकल गए। जो लोग आग लगने के स्थान पर जमा हो गए थे, वे आग को पास के घरों में फैलने से रोकने में लग गए लेकिन उन्होंने बूढ़ी औरत और दो बच्चों का बचाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किए,। श्री परमेश्वर नारायण भट ने भी धुआं देखा और घटनास्थल की ओर दौड़े तथा अन्य ग्रामवासियों से भी अपने साथ चलने के लिए कहते गए। अपने प्राणों की परवाह न करते हुए वे जलती हुई झोंपड़ी के भीतर कूद पड़े और बूढ़ी औरत तथा दोनों बच्चों के प्राण बचाए।

श्री परमेश्वर नारायण भट ने आग से तीन प्राणियों की रक्षा करने में उल्लेखनीय साहस का परिचय दिया।

17. श्री पवनाशम चैट्टियार शण्मुघम चैट्टियार,
तेक्केम्मपुजयाथु वीडु,
एलकमंगलम्, एजम्कुलम्, कुन्नाथूर तालुक,
जिला विकलोन, केरल।

भारी वर्षा के कारण विकलोन जिले की कल्लदा नदी में बाढ़ आ गई थी। 13 मई, 1972 को गोविन्दमंगलथु वीडु, पट्टाजी ग्राम के 45 वर्षीय श्री राघवन पिल्ले, जो पंचायत घाट (फेरी) में मांझी के रूप में नियुक्त थे, अपनी डोंगी में बाढ़युक्त नदी पार करते समय एक भंवर में फंस गए और बह गए। उन्होंने प्रकृति की इस उग्रता से बचने के लिए भरसक प्रयत्न किए परन्तु तीव्र धाराओं का सामना करने में सफल नहीं हुए। वे थक चुके थे और धारा के साथ-साथ अन्थामोन एडावीजकडावु घाट की ओर खिंचते गए, जहां मांझी श्री पी० शण्मुघम चैट्टियार ने उन्हें देखा। श्री चैट्टियार, अपने प्राणों को खतरे में डालकर नदी में कूद पड़े और श्री राघवन पिल्ले को ऐसे स्थान से बचा लाए जहां पानी लगभग 70 फीट गहरा था और भयंकर लहरें उठ रही थीं। यदि श्री पी० शण्मुघम चेट्टियार उल्लेखनीय साहस नहीं दिखाते तो श्री राघवन पिल्ले अपनी जान से हाथ धो बैठते।

18. श्री फिलिप वरघीस,
मैसूरी परम्बिल, पुथुपल्ली,
जिला कोट्टयाम, केरल।

11 जून, 1972 को लगभग 5.30 बजे, 9 वर्षीय एक लड़का सन्नीमोन अचानक 20 फीट पानी के गड्ढे में फिसल गया। 17 वर्षीय विद्यार्थी, श्री फिलिप वरघीस, जो कि घटना के स्थान

से एक फलांग दूर था, इस घटना के देखने वाले एक व्यक्ति की चीख सुनकर, तुरन्त ही घटनास्थल की ओर दौड़ा । अपनी परवाह किए बिना ही वह गड्ढे में कूद पड़ा तथा श्री सल्लोमीन को गहरे पानी से खींचकर बचा लिया । लड़के को बचाने से श्री फिलिप वरघीस द्वारा दिखाया गया साहस तथा तत्परता प्रशंसनीय है ।

19. श्री लक्ष्मण रामचन्द्र प्रभु,
पुलिस कॉंस्टेबल, ओल्ड पुलिस लाइंस, बयूले स्ट्रीट,
अग्रिपाड़ा, बम्बई-11 ।

30 जून, 1972 को श्री लक्ष्मण रामचन्द्र प्रभु, लाला लाजपतराय रोड पर स्थित हाजी अली पुलिस चौकी में ड्यूटी पर तैनात थे । पान्टन रोड, बम्बई का रहने वाला 12 वर्षीय मोहम्मद आरिफ मोहम्मद यूसुफ, हाजी अली दरगाह को उस पगडंडी से जा रहा था जो मुख्य सड़क से मिलती है । वह रास्ता ज्वार भाटे के दौरान जलमग्न रहता है । जिस समय लड़का पगडंडी पार कर रहा था, बड़े फाटक से अचानक एक भयंकर लहर आई जो लड़के को भयंकर समुद्र में बहा ले गई और वह सहायता के लिए चिल्लाने लगा । पुकार सुनकर श्री लक्ष्मण रामचन्द्र प्रभु दरगाह की तरफ की पगडंडी की ओर दौड़े और भयंकर समुद्र में कूद पड़े । वे लहरों का सामना करते हुए 30 गज के फासले तक तैरते गए । जब वे लड़के के पास पहुंचे तब वह डूबने ही वाला था । अति साहसिक प्रयत्न करने के बाद श्री प्रभु लड़के को किनारे पर ले आए । उन्होंने लड़के की प्राथमिक चिकित्सा भी की और उसका उपचार कराने के लिए अस्पताल ले गए ।

श्री लक्ष्मण रामचन्द्र प्रभु ने, स्वयं अपने जीवन की सुरक्षा की परवाह किए बिना लड़के को बचाने में अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

20. श्री रामकृष्ण एकनाथ गटने,
सेठ ज्योति प्रसाद विद्यालय,
हांड, जिला पूना, महाराष्ट्र ।

एक महिला तथा उसके दो पुत्र 15 फरवरी, 1972 को घड़ेश्वर मंदिर जाने के लिए भीम नदी में नाव द्वारा यात्रा कर रहे थे । जब वे नाव से उतर रहे थे, तो नाव डगमगा कर उलट गई और सभी नदी में गिर गए । श्री रामकृष्ण एकनाथ गटने नदी के किनारे पर मौजूद थे जिन्होंने घटना को देखा और नदी में कूद पड़े । वे सभी व्यक्तियों को बचाने में सफल रहे । इसी प्रकार 4 मार्च और 16 अप्रैल, 1972 को श्री गटने ने भीम नदी में एक नेत्रहीन व्यक्ति क्रमशः श्री पुंजाजी और 10 वर्षीय श्री विजय कुमार मधुकर राव हर्डे को डूबने से बचाया । श्री गटने ने 17 अप्रैल, 1973 को भीम नदी में 16 वर्षीय कुमार गजानन भगवन्तराव गटने और 7 वर्षीय कुमार गजराम बोथमल सिंधी को भी डूबने से बचाया ।

1964, 1968 और 1969 में श्री रामकृष्ण एकनाथ ने भीम नदी में डूबने से और जाने भी बचाई । श्री गटने ने अनेक व्यक्तियों का जीवन बचाने में बारम्बार निस्वार्थ साहस एवं सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

21. श्री रंगप्पा भीमगोंडा पाटिल,
ग्राम मुदालगी, जिला बेलगाँम,
कर्नाटक ।

10 अगस्त, 1971 को लगभग 10 15 बज, जीर्ण सरदर्द की रोगी ग्राम मुदालगी की श्रीमती बासव्वा ने आत्म-हत्या करने के लिए गाँव के कुंए में छलाँग लगा दी । दो लड़कियों की चीख सुनने पर मुदालगी पुलिस आउटपोस्ट का हैड कॉंस्टेबल श्री बसावन्नी वीरप्पा अन्य पुलिसमैनों के साथ घटनास्थल की ओर दौड़ पड़ा । जोखिम का ख्याल किए बिना उसने कुंए में छलाँग लगाई, महिला को उसके बालों से पकड़ कर उठाया और सहायत के लिए पुकारा । इस समय, जबकि कुंएँ पर जमा अन्य व्यक्ति कुंए में गोता लगाने में झिझक रहे थे, 21 वर्षीय श्री रंगप्पा भीमगोंडा कुंए में कूद गए और महिला को पकड़ने तथा रस्सी से बाँधने में श्री बसावन्नी वीरप्पा की सहायता की जिससे महिला को बाद में ग्रामीणों और अन्य पुलिसमैनों द्वारा ऊपर खींच लिया गया ।

श्री रंगप्पा भीमगोंडा पाटिल ने ऐसी परिस्थितियों में महिला के जीवन को बचाने में विशिष्ट साहस दिखाया जो कि दूसरों द्वारा भारी जोखिम समझा जा रहा था ।

22. श्री अधीर चन्द्र दास,
1-राधिका मोहन सैन रोड,
कदाई, बहरामपुर, जिला मुर्शिदाबाद,
पश्चिम बंगाल ।

11 जून, 1972 को 16 वर्षीय श्री निमाई चन्द्र तालुकदार, बहरामपुर रेलवे स्टेशन पर खड़ी 362 डाउन लालगोला-सियालदह सवारी गाड़ी में आइसक्रीम बेच रहा था । जैसे ही गाड़ी चली, वह कम्पार्टमेंट से बाहर आया परन्तु उसकी टाँग पायदान से फिसल गई और प्लेटफार्म तथा गाड़ी के नीचे के पायदान के बीच की खाली जगह में चली गई । उसका आइसक्रीम का बक्स भी उसके कन्धे और गर्दन से लटक कर पायदान के साथ उलझ गया तथा उसकी दाहिनी टाँग प्लेटफार्म के किनारे के साथ साथ घिसटती जा रही थी । श्री अधीर चन्द्र दास, क्षेत्रीय पर्यवेक्षक पुलिस वायरलेस, मुर्शिदाबाद जो उस समय प्लेटफार्म पर मौजूद थे, लड़के की तरफ दौड़े और उसकी बाहों को पकड़ा तथा रक्षा करने के लिए उसको खींचने का प्रयास किया । यह प्रयास करने में वह स्वयं भी प्लेटफार्म पर गिर पड़े परन्तु फिर भी वे बलपूर्वक लड़के को पकड़े रहे और उसको गाड़ी के चक्कों के नीचे सरक जाने से बचाया । काफी फासले तक श्री दास भी लड़के के साथ साथ घिसटते रहे । अन्त में वह बड़ी कठिनाई से लड़के को खींचने में सफल हुए और उसको मृत्यु से बचा लिया । इसके बाद श्री दास आघातों, थकावट और घबराहट के कारण बेहोश हो गए परन्तु कुछ समय बाद पुनः स्वस्थ हो गए ।

श्री अधीर चन्द्र दास ने इन परिस्थितियों में लड़के के जीवन को बचाने में अनुकरणीय साहस एवं साधनपूर्णता दिखाई जिसके कारण उनको गम्भीर शारीरिक चोट आई ।

23. श्री एन० सनातोम्बी सिंह,
ड्राइवर,
क्षेत्रीय संचालक का कार्यालय
एम० एम० वी० मणिपुर, इम्फाल ।

29 अगस्त, 1972 को लगभग 7.45 अपराह्न में एक लाइसेंस धारी आतिशबाजी बनाने वाले श्री थामबलनगू सिंह के घर में विस्फोट हुआ जिसमें वह, उसका लड़का तथा उसके पड़ौसी के लड़के की मृत्यु हो गई। विस्फोट की शक्ति के कारण, आतिशबाजी बनाने वाले के घर के अलावा एक मंदिर सहित पड़ौस के 6 मकान तथा स्कूल भी पूर्ण रूप से उड़ गये। स्कूल के बच्चे जो स्कूल के मलबे में दबे हुए थे, सहायता के लिए चिलाए। देखने वालों में से किसी का भी उनको बचाने का साहस नहीं हुआ। क्योंकि इमारत गिर रही थी और आग तथा धुंए से घिरी हुई थी। बच्चों की चिल्लाहट सुन कर, श्री एन० सनातोम्बी सिंह, जो समीप ही थे इमारत के भीतर की ओर दौड़े और तीन बच्चों को बचा लिया। उन्होंने 90 वर्षीय एक वृद्ध महिला को भी बचाया जो जल गई थी, परन्तु बाद में वह अस्पताल में मर गई।

श्री एन० सनातोम्बी सिंह ने अपने को जोखिम में डाल कर अनुकरणीय साहस एवं बहादुरी दिखाई।

24. श्री सरूप सिंह (जी०/152538),
41, रोड़ मेंटेनेंस यूनिट (ग्रेफ),
द्वारा 99 ए० पी० ओ०।

20 मई, 1972 को उत्तर सिक्किम हाईवे के 78.6 कि० मी० पर सड़क का एक बड़ा भाग ढह पड़ा। पायनीयर कम्पनी की एक प्लाटून बन्द रास्ते को साफ करने के लिए तैनात थी परन्तु फिसलन जारी रहने तथा शिला-खंडों के लुढ़क कर निरन्तर नीचे आते रहने के कारण काम में प्रगति करने में सफल न हो सके। अनिवार्य सुरक्षा भंडार तथा आगे के आवश्यक कार्यों के लिए, राशन को पार लाने, ले जाने के लिए एरियल रोप-वे केवल को पार करके बन्द रास्ता शीघ्र साफ करना था अतः श्री सरूप सिंह (राज) को फिसली हुई भूमि साफ करने का कार्य सौंपा गया था। कार्यवाही के दौरान दूसरे शिला खण्ड तथा मलबे का ढेर फिसल कर नीचे आ गया। इसी क्षण, सूझ-बूझ एवं सतर्कता के साथ श्री सरूप सिंह ने आने वाले खतरे से अपने सभी आदमियों को होशियार कर दिया। जैसे वे सुरक्षा के लिए दौड़े, एक पायनीयर लुढ़कते हुए शिला खण्ड से टकरा गया और मलबे के साथ खाड़ी में नीचे जा पड़ा। श्री सरूप सिंह मलबे में फंस जाने के खतरे को भली प्रकार जान कर भी पायनीयर को बचाने के लिए खाड़ी में तत्काल कूद गये। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने आहत व्यक्ति को बचाया जो कि दुर्भाग्यवश चोटों के कारण मर गया।

25. लीडिंग हेंड चन्द्र सिंह रावत (जी०/63602)
1638 पी० एन० आर० कम्पनी (ग्रेफ)
द्वारा 56 ए० पी० ओ०।

30 मई, 1972 को लगभग 7 बजे शाम को ट्रान्सपोर्ट प्लाटून 820 की एक गाड़ी जो तीन ग्रेफ कार्मिकों को ड्यूटी से वापस ला रही थी, अचानक फिसल गई और अलकनन्दा नदी की 1000 फीट गहरी तंग घाटी में गिर गई। ढलान बहुत ही सीधा था जिससे बचाने के लिए तथा हताहतों को निकालने के लिए तंग घाटी में उतरने के लिए कोई रास्ता नहीं था। इन परिस्थितियों में 1638 पी० एन० आर० कम्पनी (ग्रेफ) के लीडिंग हेंड चन्द्र सिंह रावत तथा उनकी पार्टी को तंग घाटी में उतरने, आहतो को ढूंढने, मलबे से उनको बचाने तथा समय खोए बिना, सीधी खड़ी चढ़ाई से उनको ऊपर लाने के लिये तैनात किया गया।

लीडिंग हेंड चन्द्र सिंह रावत ने अपने आदमियों को प्रोत्साहित करके तथा उनमें विश्वास उत्पन्न करके अपनी कमर में रस्सी बांधी। वे और उनके आदमी एक-एक इंच नीचे उतर करके हताहतों के पास पहुंचे और काम चलाऊ टार्च की मदद से मलबे में से आहतों को बचाया, उनकी प्राथमिक चिकित्सा की, और उनमें से तीन को, एक-एक करके, ऊपर प्रतीक्षा कर रही एम्बूलेंस में भेज दिया। अपनी स्वयं की सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए तथा अथक उत्साह के साथ, श्री रावत से आखरी आदमी को भी ऊपर सुरक्षित लाने तक कार्य जारी रखा। यदि वे इस प्रकार का साहस एवं स्फूर्ति नहीं दिखाते तो इन विकट परिस्थितियों में बचाव कार्य करना संभव नहीं हो पाता।

26. मास्टर नवनीत चौफला
द्वारा प्रधानाचार्य, डलहौजी पब्लिक स्कूल,
डलहौजी, हिमाचल प्रदेश।

3 जून, 1973 को डलहौजी पब्लिक स्कूल का एक 10 वर्षीय छात्र मास्टर नवनीत चौफला हिमाचल प्रदेश के चंबा कस्बे के पर्यटक स्थान खज्जिआर में स्कूल के अन्य लड़कों के साथ पिकनिक मना रहा था। जब वह 13 वर्षीय परमजीत सिंह के साथ खज्जिआर झील में मछली पकड़ रहा था तो परमजीत का पैर फिसल गया और वह झील में गिर पड़ा। उसको डूबता देखकर, मास्टर चौफला एक हाथ से रेलिंग पकड़ कर झील में उतर गया और दूसरे हाथ से लड़के को बालों से पकड़ने में सफल हो गया और बिना किसी की सहायता के उसको वापस झील के किनारे पर ले आया। मास्टर नवनीत चौफला ने परमजीत सिंह को बचाने में अनुकरणीय साहस एवं सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया।

अशोक मित्र,
राष्ट्रपति के सचिव

औद्योगिक विकास मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 18 दिसम्बर, 1973

संकल्प

सं० 9(33)/72-सी० जी० पी०:—सरकार ने इस संकल्प की तिथि से दो वर्षों की अवधि के लिए ग्लास उद्योग के लिए एक नामिका का गठन करने का निर्णय किया है जिसका गठन निम्नप्रकार रहेगा :—

अध्यक्ष

1. श्री के० एच० पारिख
प्रबन्ध निदेशक,
भारत आप्थालमिक ग्लास लि०
दुर्गापुर-10.

सदस्य

2. श्री जे० ए० तक्तवाला,
श्री वल्लभ ग्लास वर्कस् लि०,
आनन्द सोजित्रा रोड, वल्लभ विद्यानगर,
वाया आनंद (गुजरात) ।

3. श्री सी० के० सोमानी,
निदेशक,
हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास एण्ड इंडस्ट्रीज लि०,
2, बेलेजली प्लेस, कलकत्ता ।

4. श्री रमेश चन्द, निदेशक,
महालक्ष्मी ग्लास वर्कस् (पी०) लि०,
डा० ई० मोसस रोड, जैकब सर्किल,
बम्बई ।

5. श्री पी० एन० राय, निदेशक,
दी इंडो-असाही ग्लास कम्पनी लि०,
30-चित्तरंजन एवन्यू, कलकत्ता ।

6. श्री डी० आर० के० रेड्डी, प्रबन्ध निदेशक,
एसोसियटेड ग्लास इंडस्ट्रीज लि०,
वरद नगर, कुकातनली, हैदराबाद ।

7. श्री एन० एस० सोखी, टैकनीकल प्रबन्धक,
हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास लि०,
फरीदाबाद, एन० आई० टी० (हरियाणा) ।

8. मि० स्टीवेंस बलक्नाप, प्रबन्ध तथा तकनीकी निदेशक,
बोरोसिल ग्लास वर्कस् लि०,
44, खन्ना कंस्ट्रक्शन हाउस,
मौलाना अब्दुल गफ्फार रोड, वार्ली, बम्बई ।

9. श्री जे० पी० अग्रवाल, निदेशक,
जे० जी० ग्लास इंडस्ट्रीज प्रा० लि०,
पिम्परी, पूना-18 ।

10. श्री लक्ष्मण एस० अग्रवाल, अध्यक्ष तथा प्रबन्ध निदेशक,
सैलवानियां एण्ड लक्ष्मण लि०,
68/2, नजफ़गढ़ रोड,
नई दिल्ली ।

11. श्री एस० रामचन्द्रन, वर्कस् मनेजर,
फाइबरग्लास पिलिंगटन लि०,
9, वैलेस स्ट्रीट, बम्बई ।

12. श्री तपन के० राय, प्रबन्ध-निदेशक,
दी बंगाल इलैक्ट्रिक लैम्प वर्कस् लि०,
4, फैयरली प्लेस, कलकत्ता-1.

13. श्री पी० आर० लाटे,
चीफ (इंजीनियरी),
योजना आयोग ।

14. श्री डी० दास० गुप्ता, उप-महानिदेशक, आई० एस० आई०,
मानक भवन, 9, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली ।

श्री जी० पी० सारस्वत, सहायक निदेशक, वैकल्पिक सदस्य हैं ।

15. श्री एस० आर० कपूर, उप-सचिव,
औद्योगिक विकास मंत्रालय ।

16. श्री के० डी० शर्मा, निदेशक,
सेंट्रल ग्लास एण्ड सिरेमिक,
रिसर्च इंस्टीट्यूट, कलकत्ता ।

17. वाणिज्य मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

18. विकास आयुक्त (लघु उद्योग) का एक प्रतिनिधि ।

19. श्री डी० एस० चमाल, विकास अधिकारी (ग्लास),
तकनीकी विकास का महानिदेशालय,
उद्योग भवन, नई दिल्ली । सदस्य-सचिव

नामिका के कार्य निम्नलिखित होंगे :—

(क) कच्चे माल की आवश्यकताओं को विस्तृत रूप म आंकना और ग्लास उद्योग के लिए मानकीकृत कच्चे माल की आपूर्ति करने के लिए अभिकरण स्थापित करने हेतु साधन तथा तरीके खोजना और देश में उत्पादन को बढ़ावा देने के विचार से ग्लास उद्योग के लिए मशीनरी/फालतू पुर्जों की जरूरत को आंकना ।

(ख) ईंधन और कच्चे माल के क्षय को हटाने के विचार से कार्यकुशलता के प्रतिमानों का सुझाना, अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना, किस्म में सुधार करना और लागत में कमी करना ।

(ग) अधिष्ठापित क्षमता के पूर्णतम उपयोग का सुनिश्चय करने और विशेषतया अल्पक्षम एककों के कार्यों में सुधार करने के लिए अभ्युपायों की सिफारिश करना ।

(घ) विशेषकर अधिशेष क्षमता वाली वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए उपाय सुझाना ।

(ङ) तकनीकी कार्मिकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में नियमित विकास का सुनिश्चय करने के लिए उपयुक्त तंत्र की स्थापना का परामर्श देना ।

(च) कच्चे माल, फालतू पुर्जों और अन्य संबंधित उपकरणों के लिये आयात प्रतिस्थापन के लिए उपाय और साधन सुझाना ।

(छ) उद्योग संबंधी किसी भी मामले पर जिसके बारे में केन्द्रीय सरकार नामिका से अपनी सलाह देने का आग्रह करे, सलाह देना, तथा इस प्रकार सलाह देने के कार्यों में नामिका की सहायता के लिए जांच पड़ताल करना ।

एन० एन० टंडन, संयुक्त सचिव

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय

(परिवार नियोजन विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 19 दिसम्बर 1973

संकल्प

सं० एफ० 20020/2/73-सी० एण्ड सी० (प० नि०)—स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय (परिवार नियोजन विभाग) के दिनांक 30 जुलाई, 1973 की अधिसूचना संख्या 2-23/73-नीति में आंशिक संशोधन करते हुए भारत सरकार ने निर्णय किया है कि स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री के स्थान पर स्वास्थ्य और परिवार नियोजन उप मंत्री केन्द्रीय परिवार नियोजन परिषद् की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष होंगे ।

सं० एफ० 20020/3/73-सी० एण्ड सी० (प० नि०)—स्वास्थ्य और परिवार नियोजन एवं निर्माण आवास तथा नगर विकास मंत्रालय (परिवार नियोजन विभाग) के दिनांक 9 जुलाई, 1970 के संकल्प संख्या 8-10/69-एन० एम० ओ०/एम० ई० (प० नि०) के अन्तर्गत गठित की गई निरोध सलाहकार समिति को एतद्द्वारा समाप्त किया जाता है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रतिलिपि सभी राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों को भेजी जाए । यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में सूचनार्थ प्रकाशित किया जाए ।

आनन्द प्रकाश अग्री, उप-सचिव

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 18 दिसम्बर 1973

सं० एफ० 12-8/71-बाई० एस० 1(3)—शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय की समसंख्यक अधिसूचना दिनांक 7 दिसम्बर, 1973 के क्रम में, श्री शाहिद अली खां, संयुक्त सचिव, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय को, एतद्द्वारा 30 अक्तूबर, 1973 से, श्री कान्ति चौधुरी के स्थान पर, राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थानों की सोसायटी के अधिशासी मंडल के सदस्य के रूप में मनोनीत किया जाता है ।

टी० एस० स्वामीनाथन, उप-सचिव

भारी उद्योग मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 दिसम्बर 1973

संकल्प

सं० 3-80/73-एच० एम० (1)—सरकार कुछ समय से चीनी के उत्पादन को इस भाँति संगठित करने के उपायों पर विचार करती रही है कि जिससे पांचवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक की निर्धारित उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके । इस उद्योग की प्रमुख बात गन्ना सहकारी संस्थाओं के बनाने के साथ-साथ सर्व प्रथम चीनी उत्पादन को सहकारिताबद्ध करना रही है । हाल के वर्षों में यह पाया गया कि चीनी बनाने वालों की आर्थिक क्षमता तथा चीनी मशीन निर्माताओं के बीच उपकरण उपलब्ध करने में अधिकांशतः असन्तुलन रहा है । देश में मशीन निर्मातागण एक वर्ष में स्टैन्डर्ड आकार के 21 चीनी के संयंत्र देने में तो समर्थ हैं, क्रयादेशों की कमी ही एक प्रमुख बात रही है और जहां क्रयादेश प्राप्त भी हुए हैं उन्हें बनाये रखने हेतु वित्तीय स्थिति पर्याप्त सुदृढ़ नहीं हो पाई थी । इस संदर्भ में इण्डस्ट्रियल फाइनेन्स कारपोरेशन आफ इंडिया, राज्य सरकारों तथा चीनी सहकारिता संस्थाओं द्वारा चीनी परियोजनाओं को वित्त देने की प्रणाली की बात भी सुसंगत रूप से सामने आती है । फिर भी तथ्य यह है कि यदि चीनी उत्पादन की प्रक्रिया सुप्रवाही नहीं बना दी गई तो संभावना यह है कि पांचवीं योजना के अंत में न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में भी कमी आयेगी ।

2. चीनी मशीनों की क्षमता तथा चीनी निर्माताओं के उनके समय से उत्पादन करने में उपयोग करने की समस्या के संबंध में एक समान सन्तुलित समाधान पाने हेतु सरकार ने गैर-सरकारी तथा सरकारी व्यक्तियों की एक समिति गठित करना आवश्यक समझा है जो इस मामले की जांच करेगी और इस विषय में सरकार को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगी ।

3. समिति में निम्नलिखित व्यक्ति होंगे :—

1. श्री बी० शिवारमन, सदस्य, योजना आयोग । — अध्यक्ष
2. श्री आई० जे० नायडू, अवर सचिव, कृषि मंत्रालय ।
3. श्री एस० एम० घोष, संयुक्त सचिव, भारी उद्योग मंत्रालय ।
4. अध्यक्ष, इण्डस्ट्रियल, फाइनेंस कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड ।
5. प्रमुख निदेशक, चीनी तथा वनस्पति निदेशालय, कृषि मंत्रालय ।
6. प्रेसीडेंट, शुगर मशीनरी मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ।
7. सेक्रेटरी, नेशनल कोआपरेटिव डिवलपमेंट कारपोरेशन ।

8-9. शुगर मशीनरी मैन्यूफैक्चरर्स के दो प्रतिनिधि ।

10-11. महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश सरकारों के चीनी के प्रभारी राज्य निदेशक ।

12. श्री पी० आर० दास गुप्ता, उप सचिव, भारी उद्योग मंत्रालय — सदस्य-सचिव

समिति के निम्नलिखित विचारार्थ विषय होंगे :—

1. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में चीनी का वर्ष-वार वास्तविक उत्पादन लक्ष्य तैयार करना ।
2. आवश्यकताओं का पूरा करने की योजना तैयार करना ;
   (क) विद्यमान कारखानों का विस्तार करके ।

(ख) नए कारखाने लगाकर ।

3. चीनी संयंत्रों की माँग और इसके अनुसार सुपुर्दगी समय-सीमा तैयार करना ।

4. चीनी संयंत्रों के लिए धन देने की एक विश्व प्रणाली तैयार करना जो उन्हें चीनी मशीन निर्माताओं को आर्डर देने में समर्थ बनाएगी ।

5. चीनी संयंत्रों के इकट्ठे आर्डर देने के लिए एक प्रणाली या एजेंसी विकसित करना जिससे चीनी संयंत्रों की समय से सुपुर्दगी करने में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से स्टेंडर्ड पुर्जों विशेष रूप से वैद्युत के लिए अग्रिम आर्डर दिए जायेंगे ।

6. अपेक्षित विभिन्न संयंत्रों को सप्लाई करने के लिए चीनी मशीन क्षेत्र में विनियोजन तथा निविष्ट साधनों की आवश्यकताओं का पता लगाना और सामग्री के लिए एक समय-बद्ध आवंटन नीति तथा वित्त विनियोजन की ऋण नीति का सुझाव देना ।

4. समिति, भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार को आठ सप्ताह में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी ।

संकल्प

सं० 2-85/73-एम० एम०-1—सरकार के ध्यान में यह बात आई है कि कुछ वर्षों से सूती वस्त्र मशीनों के निर्माण की अधिष्ठापित क्षमता का कुछ अंश तक कम उपयोग हुआ है । सूती वस्त्रों की आवश्यकता के अनुमानों से सूती वस्त्र मशीनों की क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है और इस बात का सुनिश्चय करने के लिये तत्काल कार्यवाही की जा रही है कि सक्षम सूती वस्त्र निर्माता वस्त्र मशीनों के लिये क्रयादेश दें और सूती वस्त्र मशीनों की क्षमता का इस प्रकार पुनर्गठन किया जाय जिससे माँग पूरी हो सके । यह भी देखा गया है कि सूती वस्त्र उद्योग के अभिनवीकरण को प्रतिवर्ष धक्का पहुंचा है, जिसके फलस्वरूप उत्पादिता कम होती जा रही है और ऐसा जान पड़ता है कि वह स्थिति आ गई है जबकि अभिनवीकरण और आधुनिकीकरण की योजना को रोका नहीं जा सकता है ।

2. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सूती वस्त्र मशीन उद्योग के लिये एक विषद योजना तैयार करने हेतु सरकार ने गैर-सरकारी और सरकारी सदस्यों की एक समिति इस विषय में जाँच करने और सिफारिश करने के लिये नियुक्त करना आवश्यक समझा है ।

3. समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

1. श्री एम० सौधी, सचिव, भारी उद्योग मंत्रालय । — अध्यक्ष
2. श्री एम० नरसिंहम, अतिरिक्त सचिव, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय ।
3. श्री एस० एम० घोष, संयुक्त सचिव, भारी उद्योग मंत्रालय ।
4. श्री एम० नारायणस्वामी, संयुक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय ।
5. श्री एम० के० वेंकटचलम, संयुक्त सचिव, बैंकिंग विभाग ।
6. डा० ए० के० घोष, आर्थिक सलाहकार ।
7. वस्त्र आयुक्त ।
8. श्री प्रभु मेहता, चेयरमैन, टेक्सटाइल मशीनरी मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ।
9. चेयरमैन, इंडियन काटन मिल्स फैडरेशन ।
10. श्री पी० आर० दासगुप्ता, उप सचिव, भारी उद्योग मंत्रालय । — सदस्य-सचिव

4. समिति के निम्नलिखित विचारार्थ विषय होंगे :—

1. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में विभिन्न प्रकार की वस्त्र मशीनों की आवश्यकताओं का ठीक-ठीक पता लगाना ।
2. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में समय-बद्ध कार्यक्रमों के अंतर्गत विद्यमान मिलों के आधुनिकीकरण और अभिनवीकरण करने की आवश्यकताओं के लिए सूती वस्त्र मशीनों की आवश्यकताओं का पता लगाना ।
3. सूती वस्त्र निर्माताओं द्वारा (1) और (2) के लिये आवश्यक कुल पूंजी विनियोजन का पता लगाना ।
4. आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु उत्पादन तथा वित्त संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन तथा वित्त संबंधी योजनाएं बनाना ।
5. वित्तीय तथा उत्पादन योजनाओं पर सुझाव देना जैसा कि अभिनवीकरण तथा आधुनिकीकरण करने के साथ-साथ अतिरिक्त उत्पादन के लिए पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में वस्त्र मशीनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आवश्यक समझा गया है ।

5. समिति, भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार को आठ सप्ताह के भीतर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी ।

पी० आर० दासगुप्ता, उप-सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 17th December 1973

No. 86-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of SARVOTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK to the undermentioned person for conspicuous courage under circumstances of very great danger to his own life :—

Shri Rameshwar Dayal Bhargava,
Conductor,
Madhya Pradesh State Roadways Transport Corporation,
Shivpuri,
Madhya Pradesh.

On the 21st July, 1971, Shri Rameshwar Dayal Bhargava was travelling by public bus No. MPH 6681, which was proceeding from Pichhor to Shivpuri. The bus was swept away while crossing the heavily flooded Bhanwar Nala. All the occupants of the bus were trapped, except the driver who managed to escape. Shri Bhargava broke open the glass pane of the emergency exit and after extricating himself climbed to the roof of the bus. He then pulled out several of the trapped co-passengers and put them on the roof of the bus. Soon he found that the rescued persons were on the point of being swept away by the fast current. To avert this threat he got hold of a net meant for securing the baggage of the passengers, and fastened one end of it to the bus and the other end to an uprooted tree on the bank. He then carried the passengers one by one to safety on the bank. By using a turban, he also dragged out of the nala a police man who would otherwise have been drowned. He continued his life saving efforts till he himself fell down totally exhausted. Shri Bhargava displayed an extraordinary spirit of humanism and saved a dozen lives from the jaws of death, putting his own life again and again in jeopardy.

No. 87-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK to the undermentioned persons for courage and promptitude under circumstances of great danger to their own lives :—

1. Shri Venugopal,
Village Dharmapur, P.O. Shivapuram,
Police Station and Tehsil Rangat,
Middle Andaman, Andaman and Nicobar Islands.

2. Shri Gopinathan,
Village Dharmapur, P.O. Shivapuram,
Police Station and Tehsil Rangat,
Middle Andaman, Andaman and Nicobar Islands.

On the 25th September, 1971 a number of school children were returning to Dharmapur village from the Higher Secondary School at Rangat in Andaman. For reaching their village they had to cross a Nallah which was in high flood. 11 girls and 4 boys besides two cultivators boarded a dinghi. Suddenly the dinghi was caught in a strong current and was overturned and all those in the dinghi fell into the Nallah. The two cultivators and two boys swam across. The other two boys named Venugopal and Gopinathan began rescuing the girls and succeeded in lifting eight of them to the top of the overturned dinghi. Due to precarious balance, the dinghi was again overturned throwing the girls once again into the Nallah. Venugopal and Gopinathan stuck to their heroic efforts. Three of the eight girls caught hold of Venugopal but he managed to save the situation by making two of them cling on to the dinghi and dragging the third one to the shore by her hair. He came back and rescued one of the two girls who had almost lost her grip. Gopinathan rescued another girl by dragging her to the shore. When one of the drowning girls caught hold of the boat-man Shri Sukumaran, Gopinathan immediately caught hold of her and lifted her up out of the water. In their valiant struggle to save the girls from drowning, Venugopal and Gopinathan exhibited conspicuous courag and determination unmindful of the great risk to their own lives. Through their heroic efforts they saved the lives of four young girls.

3. Master Parameswaran Rajappan,
Pariyarathu Veedu,
Village Vazhappally West,
Changanacherry, Dist. Kottayam (Kerala).

On the 12th October, 1971, a boy named P. Chajee aged 5 years, studying in the first standard in the Vazhappally West U.P. School in the Kottayam District slipped accidentally into a 60 feet deep unused well in the school compound. On hearing the boy's cries, some persons rushed to the spot. Out of them, Master Parameswaran Rajappan a teenage student climbed down the well promptly with the help of a rope and then jumped into it. By than Shajee had sunk to the bottom of the well. Master Rajappan dived into the water and quickly brought the boy to the surface. He kept himself floating for about 5 minutes with Shajee in his left hand and then with the help of the rope lowered into the well, rescued the boy to safety.

Master Parameswaran Rajappan thus showed initiative, presence of mind, promptitude and conspicuous courage in saving the boy from drowning in spite of the danger to his own life.

4. Shri Bhalchandra Kisan Kate,
272, Dapodi,
Poona.

On the 29th June, 1971, two girls named Mandakini Bhikoba Kate aged 10 and Janabai Baban Murkute aged 14 were washing clothes in the Pavana river at Poona. Startled by the barking of a dog, Kumari Mandakini fell in the swollen river and was swept away by the current. The other girl Janabai jumped into the water to rescue her but was herself swept away. On hearing the hue and cry raised by some women, Shri Bhalchandra Kisan Kate aged 19 noticed both the girls at a distance of 40 to 50 feet being swept away by the strong current. He instantly jumped into the river with clothes on and rescued them. Though of tender age, Shri Kate exhibited sefless courage and unique presence of mind in saving two lives from drowning without caring for his own life.

5. Shri Chanan Singh (G/No. 106771),
Assistant Chargeman,
Village and Post Office Bagli Kalan,
District Ludhiana (Punjab).

There was a heavy and unexpected land-slide near the Rishi bridge site on Indo-Sikkim border on the 24th January, 1970 at about 1830 hours, in which one officer and 29 GREF pioneers were killed and one officer and 25 GREF poineers were seriously injured. All of them were buried under the debris.

A rescue party under the overall charge of 2/Lt. H. S. Khara (SS-21056) rushed to the site and immediately started rescue operations. Shri Chanan Singh (G/106771) Assistant Chargeman, working under 2/Lt. Khara by taking risks and showing complete disregard to personal safety, infused confidence in the men engaged on rescue operations. As the operation was proceeding, it became very dark as lighting arrangements at the site had been damaged by the slide. The slide was still active and the rescuers were in constant danger of being trapped under the boulders and earth coming down the slide. In spite of this the rescue party succeeded in pulling out all the persons burried in the debris and arranging medical treatment for the injured. Throughout the rescue operations, Shri Chanan Singh faced grave danger to his own life. It was entirely due to his courage and zealous efforts that a large number of persons buried under the land-slide could be rescued alive.

6. Shri Tara Chand,
Village Salehar,
Tehsil Ranbir Singh Pura,
Jammu.

On the 24th December, 1971, Shri Dewan Chand and his family who were returning on a tonga to their village attempted to use a short cut between village Jagtu Chak and Pasgal at GR 007294 which had been mined along with several other places because of operational necessity during the Indo-Pakistan war. The tonga went over an anti-tank mine and in the resultant explosion all the four occupants were seriously injured.

Shri Tara Chand who arrived at the scene by chance, saw the pitiful condition of the injured persons. He attempted to organise rescue but was warned by the local people that he too would be blown up. Disregarding all risks to him-

self Shri Tara Chand alone entered the mine field four times to extricate first two children and then the parents one by one. The parents subsequently died but the lives of the two children were saved. Shri Tara Chand displayed conspicuous and rare courage in complete disregard of his own safety in order to save the lives of others.

7. Kumari Marykutty Mathew (Molykutty),
Sanchagathil, Koratty,
Kanjirapally, District Kottayam (Kerala).

On the 29th March, 1972, Sheela, aged 9 years, was suddenly caught by the current and swept away into the deep waters while bathing in the manimala river at Kattikayam near Koratty. Seeing the little girl struggling for her life, her elder sister Valsamma aged 12 years leaped into the river and caught hold of Sheela but was unable to rescue her. Another girl named Thresiamma, aged 15 years, who saw this dreadful sight, jumped into the river to their rescue, but when the two girls caught hold of her, all the three began to sink. The water at the place of the incident was ten to twelve feet deep. Hearing the hue and cry, Kumari Marykutty Mathew (Molykutty) aged 18 years, jumped into the river in spite of being warned by others of danger to her own life. She dived into the water and managed to bring all the three girls to the river bank. The girls were unconscious and regained consciousness after first-aid was given to them by the people gathered there.

Kumari Marykutty Mathew (Molykutty) displayed extraordinary courage and promptitude in saving three lives from drowning at great risk to her own life.

8. Shri Kaligithi Koteswara Rao, (*Posthumous*)
Undi, Bhimavaram Taluk,
District West Godavary,
Andhra Pradesh.

On the 4th August, 1972 at about 11 A.M. Shrimati Appala Narasamma of Palacoderu village jumped from the railway bridge in Bhimavaram town into Yenamadurru drain with a view to committing suicide. Shri Kaligithi Koteswara Rao, aged 27 years, on seeing the lady drowning in the drain, immediately jumped into the drain to save her. In this process, Shri Rao lost his life. Shri Kaligithi Koteswara Rao exhibited exemplary courage and public spirit in making an effort to save the life of Shrimati Appala Narasamma.

9. Shri Motiram Atmaram Mankar,
Railway Gateman, Railway Station Yeotmal,
Yeotmal, Maharashtra.

10. Shrimati Jashodabai,
C/o Shri Sadu Ganpat Raut,
Railway Gateman,
Railway Station Yeotmal,
Yeotmal, Maharashtra.

Shri Motiram Atmaram Mankar, Gateman who was on duty at the Dhungarpur gate railway level crossing on the 12th February, 1970 closed the railway gate at about 1630 hours and was waiting for the train coming from Yeotmal railway station. The road from Yeotmal to Amravati passing through this level crossing lies along a continuous steep slope for about one and a salf furlongs towards and even beyond the level crossing. At about 1645 hours, a State Transport bus MRR 6356 coming from Yeotmal to Amravati with 62 passengers approached the level crossing and after dashing against the gates stopped on the railway track. By then the train which had already left Yeotmal railway station was only about 200 feet from the level crossing. Shri Mankar, realising the gravity of the situation ran towards the incoming train waving a red flag to stop it. He was followed by Shrimati Jashodabai, wife of another gateman. As the train was already speeding, they had to scream to attract the attention of the engine driver. Luckily the driver heard their cries and applied the brakes. The train stopped after giving a slight push to the State Transport bus standing on the railway track. None of the passengers or any one from the public was injured. No injuries were received by Shri Mankar and Shrimati Jashodabai in this rescue operation. The acted with great courage, promptitude and presence of mind in a very critical situation and risked their own lives in preventing a collision between the train and the bus, thereby saving the large number of passengers in the bus from being killed or injured.

11. Shri Kalyan Singh,
Narayanbagurh, Tehsil Karan Prayag,
District Chamoli, Uttar Pradesh.

On the 20th April, 1972, Shri Ram Singh, aged 15 years slipped into the Pindar river while taking bath and was carried away by the strong current. On seeing the boy floating, one Shri Mahabir Singh Rawat shouted for help and some other persons gathered on the banks of the river. By then the boy had been carried away more than 200 metres towards the Narayanbagurh Block Colony. Shri Kalyan Singh, who also happened to be there, noticed the drowning boy. He jumped into the river with clothes on and succeeded in bringing the boy to the bank. The river was more than 3 metre deep and over 50 metre wide at the place where Shri Kalyan Singh rescued the boy. The water was very cold and the current very swift. Shri Kalyan Singh showed extraordinary courage and presence of mind in saving the life of the boy without caring for the hazards to own life.

12. Shri B. Raja Reddy,
Kalyan Khani No. 1 Incline,
Mandamari Division,
Singareni Collieries Co. Ltd.,
P.O. Kothagudium Collieries,
Bhadrachellam Road Station,
Andhra Pradesh.

During the first shift on the 6th January, 1972, at Kalyan Khani No. 1 Incline, Mandamari Division, a serious accident took place when Shri Jupaka Posham, shot-firer, was trapped underneath the stone which had fallen over him. Coal Cutter Shri B. Raja Reddy who was at a distance of about 33 metres from the place of accident, went over to the accident spot and freed Shri Jupaka Posham from the fallen stone and carried him to a safe distance although two shots had already been lighted and would have endangered his life, had they exploded while rescuing Shri Jupaka Posham. Shri Reddy displayed an extraordinary degree of courage and high sense of responsibility in rescuing a fellow worker under circumstances which posed great danger to his own life.

13. Shrimati Minati Santra,
C/o Shri Bhajahari Santra,
Village Joynagar, P.O. Gourangachek,
Police Station Udoynarayanpur,
District Howrah, West Bengal.

In the last week of July, 1972, three children of Joynagar named Haru Santra, Tapasi Santra and Dhannya Santra suddenly slipped into deep water while taking bath in river Damodar. They held on to one another clasping their arms and tried to come out of the stream. Shrimati Avy Santra, mother of Dhannya Santra, finding the children being swept away by the current, jumped into the deep water and caught the children but could not come out as the current was very strong. Shrimati Minati Santra who happened to see them being swept away by the swirling water, jumped into the river and brought them out of the river safely. She displayed commendable courage and promptitude in rescuing four persons in the face of grave danger to her own life.

14. Shri Sudhir Kumar, (*Posthumous*)
S/o Dr. Satya Pal Gupta,
Kotly Colony, Rehari, Jammu.

Three boys namely Jasjit Singh, Sudhir Kumar and Virendra Singh were walking along the railway track in Kapurthala. Jasjit Singh was in the centre, Sudhir Kumar was to the right and Virendra Singh to the left. They were engrossed in talk and were not aware of a train approaching from behind. Suddenly Virendra Singh noticed the train first when it was only 6 yards from them. He jumped to the left of the railway track and saved himself. Sudhir Kumar also jumped to the right while Jasjit Singh still on the track also tried to jump but fell down. Sudhir Kumar at once went on the track to pull out Jasjit Singh but in the process was hit by the train and died along with Jasjit Singh.

trying to save the life of his companion, Shri Sudhir Kumar made the supremo sacrifice of his own life and thereby set an excellent example of courage and bravery.

No. 88-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of JEEVAN RAKSHA PADAK to the undermentioned persons for courage and promptitude in saving the life at the risk of grave bodily injury to themselves :—

1. Shrimati Kaveribai,
Karwar, District North Kanara,
Karnataka.

On the 23rd November, 1971, in the locality known as Kodibag in Karwar town, a wild buffalo chased a cyclist who was having a three year old child on the carrier. The cyclist became panicky and in his bid to escape, he drove towards a well on the road side. When he suddenly applied the brakes, the child was thrown into the well. He cried for help and on hearing this, Shrimati Kaveribai rushed to the spot. She plunged into the well without any regard for her personal safety and rescued the child. Shrimati Kaveribai displayed conspicuous courage and presenle of mind in saving the life of the child.

2. Kumar Devidas Shankar Divkar,
At and Post Ramraj, Tehsil Alibag,
District Kolaba, Maharashtra.

On the 12th August, 1970, Kumar Ramchandra Narayan Vetkoli, a ten year old cowherd was crossing the river near village Ramraj in Kolaba district when the water level in the river was hardly six to ten feet deep. Suddenly there was a gush of water from upstream and the water level rose to fifteen to twenty feet. The boy was about to be washed away when some ladies on the river bank began shouting for help for his rescue. On hearing this, Kumar Devidas Shankar Divkar, a boy of 15, rushed to the spot and jumped into the river without a moment's delay. After swimming a good distance and with great efforts, he reached the drowning boy and successfully brought him back to the river bank alive.

Kumar Devidas Shankar Divkar showed exemplary courage and presence of mind in rescuing Kumar Ramchandra Narayan Vetkoli.

3. Shri Thommanamattathil Kumaran Raju,
Karapuzha Veedu, Vellappady,
Palai, Kerala.

On the 7th February, 1971 at about 10.30 A.M. Krishna Kumar, a student of St. Vincent's English Medium High School Palai, was bathing in the Meenachil river at Palai Church Bathing ghat along with his friends when he accidentally slipped into the river. Seeing the boy struggling for his life Shri T. K. Raju, aged 18 years, a student of the Government High School, Palai, who was nearby, jumped into the river without caring for his own safety and rescued Krishna Kumar by dragging him out of the deep water. But for the timely and courageous act of Shri Raju, Shri Krishna Kumar would have definitely been drowned. Shri T. K. Raju displayed exemplary courage and promptitude in rescuing a fellow student.

4. Shri Dattatrava Rama Magdum,
At Post Ariunwada Taluka Shiroli,
District Kolhapur, Maharashtra.

On the 31st August 1970, Shri Dattatrava Rama Magdum was returning to Ariunwada along with 35 to 40 other persons in a ferry boat from the annual fair (Anna Bawa) held on the bank of Krishna river on the side of Mirai Village. Suddenly they heard the people shouting and saw a boy being carried away by the swift current of the river. Shri Magdum jumped into the river and caught hold of the hand of the boy. He rescued the boy from the current and brought him to the river bank.

Again on the 28th October, 1971, Shri Shabir Hussain Mujawar, aged 17 years, while taking bath in Krishna river was found to be drowning. On hearing the shouts from the people around for help, Shri Magdum who was in a boat nearby, jumped into the water and rescued Shabir Hussain. Shri Magdum himself was not well at that time. In spite of this, he showed commendable promptitude in rushing to the rescue of a fellow citizen.

5. Shri Jaisingrao Annasaheb Bhosle,
701, Gokhalenagar, Pune City,
Maharashtra.

On the 25th February, 1971, Shri Jaisingrao Annasaheb Bhosle had gone out for a stroll with Shri Laxam Raghunath Javlekar. They heard a groaning sound coming from an abandoned well nearby and when they looked into the well they noticed someone inside. Shri Bhosle was able to get hold of a rope coiled round a nearby tree. He took the rope and went to the well along with his companion Shri Javelkar and a hutment dweller. He took one end of the rope and requesting the other two persons to hold the other end, he descended into the well which was 25 feet deep. On reaching the water, he caught hold of the arm of the drowning person and shouted to his companions to pull him out. However, he lost his grip and fell into the well. He again requested them to throw the rope and was pulled up along with the drowning person, a woman, who was in an unconscious condition. He immediately rendered first aid to her as a result of which she regained.

Shri Jaisingrao Annasaheb Bhosle displayed rare courage of a high order and demonstrated very high civic sense in rescuing the woman without caring for his personal safety.

6. Shri Vasudeo Dhondushet Wagh,
House No. 1960, Somwar Peth,
Nasik, Maharashtra.

On the 27th July, 1971, some children were playing on the stair-case of a house in Nasik at about 4 P.M. They tied one end of a loose iron spring to a live electric wire in the stair-case and fixed the other end to the latch of a door. While playing with this wire, one of them, a girl named Mina Manohar Pawar lost her life by electric shock. Shri Vasudeo Dhondushet Wagh, who was on the first floor of the house, jumped 25 feet down and switched off the main current, thus saving the lives of the other three children who would have otherwise lost their lives due to electrocution.

Shri Vasudeo Dhondushet Wagh displayed exemplary courage and presence of mind in saving three lives in circumstances which exposed him to grave bodily injury.

7. Shri Vittalal Gopinath,
Tiptur, District Tumkur,
Karnataka.

Shri Taverekere Subha Rao, a landlord of Tiptur, expired at Bangalore on the 25th January, 1970. On hearing the sad news, his wife overstruck with grief jumped into a well situated in the compound of her house. At that time, Shri Vittalal Gopinath, aged 19 years happened to reach there. When told about this incident he plunged into the well with clothes on, caught hold of the woman by her hair by one hand and lifted her body with his leg to prevent her from drowning. The woman was later lifted out of the well with the help of others and survived as a result of Shri Gopinath's prompt action disregarding the danger to his own life.

8. Shri Veeranagaiah,
Police Constable No. 1272,
City Armed Reserve Police,
Bangalore City, Karnataka.

Shri Veeranagaiah, Police Constable No. 1272 who was not on duty, was returning home on the 8th July, 1971 at about 1100 hours when he noticed a 13 year girl accidentally falling into a large well. He rushed to the well and saw the girl struggling in the water. Without wasting time, he plunged into the well, caught hold of the girl and swam to the edge of the well where an iron ladder was fixed. He then carried the girl to the top of the well where she was given first aid. She was later taken to the hospital where she recovered after 3 days of treatment. Shri Veeranagaiah acted with great courage and presence of mind in rescuing the girl.

9. Shri M. Kathan,
Achampathu Post Office,
District Madurai, Tamil Nadu.

10. Shri Chelliah,
Village Narasingam,
P.O. near Othakadai,
District Madurai, Tamil Nadu.

Due to heavy rains in the Catchment area of the Vaigai Reservoir there was a flood in the river at Madurai on the night of the 16th December, 1971. The residents on the banks of the river and other low-lying areas had been asked to vacate their huts. The people who had not vacated their huts got stranded in the floods when the flood waters suddenly rose late on the night of the 16th December, 1971. The entire police force in Madurai town was mobilised and they with the assistance of the Revenue and Corporation officials and fire service staff undertook the rescue operations from the early hours of the 17th December, 1971. A helicopter of the Agricultural Aviation Ltd., Bombay stationed at Tiruchirapalli was requisitioned, but during the rescue operations, it met with an accident and fell into the flood water. The Pilot of the helicopter baled out, swam across the flooded river but was caught at the edge of the culvert across the river in Kuruvaikaranasalai. None could dare to cross the river to save the Pilot because of the swift current. At this moment, Sarvashri M. Kathan and Chelliah came forward and swam across the swift current with the help of rubber tubes and ropes and managed to rescue the Pilot.

A Navy helicopter requisitioned from Cochin arrived on the 18th December, 1971 and started rescue operations when the water level was receding. Due to thorny bushes on the river-bed, the rescue work during night became difficult. Sarvashri M. Kathan and Chelliah with torch lights tied to their turbans, jumped into the river, swam across the swift current and managed to rescue a number of persons marooned in the floods. Out of eighteen persons saved, ten persons were saved by Sarvashri Kathan and Chelliah. Both of them displayed commendable courage in circumstances fraught with danger to the rescuers.

11. Shri Yashpal Syall, G/11538,
House No. 73/2,
Phillaur, Punjab.

Due to heavy and incessant rains on the 20th July, 1970 the river Alaknanda and its tributaries had an unprecedented flood which caused heavy damage to Rishikesh-Joshimath-Badrinath and Joshimath-Malari roads. Communication system on both these roads was completely disrupted and posed an enormous problem to the movement of resources for restoration works. On the 30th July, 1970, Shri R. D. Saklani, AE of HQ 21 BRTF and Shri Yashpal Syall, Superintendent, B/RI of 3 RMU of 155 Construction Company along with CP labourers were proceeding towards Joshimath. While crossing Dhak Nala over a foot bridge, Shri Saklani slipped into the Nala due to sudden gush of water over the bridge and was swept away about 30 feet by the fast current and was practically drowned. Shri Syall ran along the Nala, jumped into the stream without caring for his own safety and pulled out Shri Saklani. Though he was hit by rolling stones and sustained injuries, he succeeded in saving Shri Saklani.

Shri Yashpal Syall displayed courage and promptitude under circumstances which exposed him to grave bodily injury.

12. Shri Nollu Poliah,
Lascar Grade II, Dredging Foreman Section,
Marine Department, Port Trust,
Visakhapatnam.

On the 29th October, 1971, the Hopper Barge 'Kailas' was taken out to sea despite cyclonic weather for dumping the loaded material dredged from Barge Berth II of the Outer Harbour Project at Visakhapatnam. While the dumping operation was going on, two Lascars, Sarvashri K. Ch. Appalanaidu and K. Thatarao met with an accident and fell overboard due to heavy swell and cyclonic weather conditions prevailing in the Bay. Shri Nollu Poliah who was in the barge, immediately jumped into the water and saved Shri K. Ch. Appalanaidu who was at the point of drowning. Shri K. Thatarao who did not sustain any injury swam ashore.

By his courageous act, Shri Nollu Poliah had not only saved the life of his colleague but also set an example of devotion to duty without caring for his own personal safety.

13. Shri Dhrub Singh,
Superintendent,
Cold Rolling Mills, Rourkela Steel Plant,
Rourkela, Orissa.

On the 22nd July, 1970 while the mechanical staff was gas cutting a damaged pipe, a serious fire broke out on oil soaked walls in the Cellar of Hot Dip Tinning Lines of Cold Rolling Mills of the Rourkela Steel Plant, engulfing the entire area containing inflammable palm oil in tanks, gas pipes, electrical cables and mechanical and electrical equipments. Shri Dhrub Singh, with quick presence of mind and in spite of great personal risk due to poor visibility and danger of explosions, managed to shut off the gas valves and switched off the power. He rushed half-way into the Cellar through the staircase in spite of the thilk dark smoke along with Fire Brigade men and directed them in a manner calculated to prevent the fire from spreading further. An explosion would have taken place, had there been a moment's delay. Shri Dhrub Singh with his courage and initiative, guided and inspired all the men. He personnally directed the water-hose towards the fire through a hole which was just above he palm oil tanks and thus prevented the fire from reaching the palm oil tanks. He saved 20 persons, costly equipment and material which would otherwise have affected the production of the Hot Dip Tinning Line and caused a loss of about Rs. 15 crores.

14. Shri Munir Ahmed Bhat,
Apprentice Engineer, Irrigation and Flood Control Department,
Government of Jammu and Kashmir.

On the 13th Feburary, 1972, the trainee officers of the Water Resources and Development Training Centre, University of Roorkee paid a visit to Ichari Dam (Yamuna Scheme) in two batches. When one batch came out of the intake and the second batch was going to visit same, Shri A. H. Al-Shami, a guest trainee officer from Iraq, slipped and fell into the first hopper of the desilting tunnel. Seeing Shri Shami struggling to keep himself afloat, the other trainees raised an alarm. Shri Munir Ahmed Bhat heard the noise and immediately rushed to the spot. As Shri Shami was at the point of being drowned, Shri Munir Ahmed Bhat in utter disregard of his his own safety jumped into the hopper and gave courage to Shri Shami to keep himself afloat in his company. After a few minutes, a rope was thrown into the intake and both of them were rescued. Shri Bhat showed exemplary courage in rushing to the rescue of the trainee.

15. Master Eruthattil Subramonian,
Ichampathoor, Chungathara Village,
Ernad Taluk, District Malappuram, Kerala.

On the 19th December, 1971, two labourers namely Kooripakil Kunhu aged 24 and her brother Raveendran, aged 11 while taking bath in a pond in the Ichampathoor temple in Chungathara village, accidentally slipped into the deep waters and were about to be drown. Three persons who went to rescue them, also about to be drowned, as none of them knew swimming. A large number of people who assembled there looked on helplessly when Master Eruthattil Subramonian, aged 14, suddenly jumped into the water and rescued three persons with the help of a bamboo pole while some other rescued the rest. However, Kooripakil Kunhu and Raveendran died on their way to the hospital. But for the timely action of Master Subramonian, the death toll would have been five. Master Eruthattil Subramonian displayed courage and promptitude in saving the lives of three persons at grave risk to his own safety.

16. Shri Parameshwara Naravana Bhat,
Harigar Village, Siddapur Taluk,
District North Kanara, Karnataka.

On the 17th July, 1972, at about 1200 hours, a big thatched hut in Kolikattu, a hamlet of Harigar Village in Siddapur Taluk, where 6 families were living, accidentally caught fire. While the able bodied members of the family were away, all the ladies and children of the family except an old lame lady and two babies in the cradle, managed to come out of the burning hut. The people who gathered on the scene of the fire engaged themselves in preventing the fire from spreading

to the neighbouring houses but did not make any effort to rescue the old lady and the two children. Shri Parameshwara Narayana Bhat who also noticed the smoke, ran to the spot asking other villagers to follow him. He rushed inside the burning hut, unmindful of the grave risk to which he himself was exposed, and rescued the old lady and the two children.

Shri Parameshwara Narayana Bhat displayed exemplary courage in rescuing three lives from the fire.

17. Shri Pavanasam Chettiar Shanmugham Chettiar,
Thekkemampuzhayathu Veedu,
Elankamangalam, Ezhamkulam, Kunnathur Taluk,
District Quilon, Kerala.

Due to heavy rains the Kallada river in Quilon district was in spate. On the 13th May, 1972, Shri Raghavan Pillai, aged 45 of Govindamanglathu Veedu, Pattazhi village, employed as a ferry man at the Panchayat ferry, was crossing the flooded river in his canoe when it was caught in a whirlpool and was washed away. He tried his best to take the fury of the nature in his stride but did not succeed in facing the sweeping currents. Having lost his energy, he was dragged along the current towards the Anthamon Edavazhykadavu ferry, where the ferry man Shri P. Shanmugham Chettiar noticed him. Shri Chettiar risking his life, jumped into the river and rescued Shri Raghavan Pillai at a point where the water was about 70 feet deep and furious current was raging. But for the exemplary courage exhibited by Shri P. Shanmugham Chettiar, Shri Raghavan Pillai might have lost his life.

18. Shri Philip Varghese,
Masoori Parambil, Puthupally,
District Kottayam, Kerala.

On the 11th June, 1972 at about 5.30 P.M. Sunnymon, 9 years boy, accidentally slipped into a ditch having about 20 feet of water. On hearing a call made by an on looker, Shri Philip Varghese, a 17 year old student who was a furlong away from the place of the incident, immediately rushed to the spot. Without caring for his safety he jumped into the ditch and dragged Shri Sunnymon from the deep water to safety. The courage and promptitude shown by Shri Philip Varghese in saving the boy are commendable.

19. Shri Laxman Ramchandra Prabhu,
Police Constable,
Old Police Lines, Wyle Street,
Agripada, Bombay-11.

On the 30th June, 1972 Shri Laxman Ramchandra Prabhu was on duty at Haji Ali Police Chowky on Lala Lajpatrai Road. Mohomed Arif Mohomed Yusaf, aged 12 years, of Patton Road, Bombay, was on his way to Haji Ali Durgah which connects the main road by a narrow foot-way which remains submerged during high tide. As the boy was crossing the foot-way the heavy gale which was blowing suddenly raised a giant wave which swept the boy into the rough sea and he screamed for help. On hearing the crises, Shri Laxman Ramchandra Prabhu rushed along the foot-way towards the Durgah jumped into the rough sea and swam a distance of 30 yards facing the waves. The boy was about to be drowned when he reached him. After desperate efforts Shri Prabhu brought the boy to the shore. He also gave the boy first aid and removed him to a hospital for treatment.

Shri Laxman Ramchandra Prabhu showed extreme courage in saving the life of the boy at grave risk to his own safety.

20. Shri Ramkrishna Eknath Gatne,
Seth Jotiprasad Vidyalaya,
Dhond, District Poona, Maharashtra.

On the 15th February, 1972, a woman and her two sons were sailing in a boat along the Bhima river for Ghareshwara temple. While getting down, the boat toppled and all of them fell into the river. Shri Ramkrishna Eknath Gatne who was present at the bank of the river saw the incident and jumped into the river. He was able to save all the persons. Similarly Shri Gatne saved Shri Punjaji, a blind man and Shri Vijaykumar Madhukarrao Harde, aged 10 years from drowning in the Bhima river on the 4th March and the 16th April, 1972. Shri Gatne also saved Kumar Gajanan Bhagwantrao Gatne, aged 16 years and Kumar Gajaram Bodhamal Sindhi aged 7 years from drowning in the Bhima river on the 17th April, 1973.

Shri Ramkrishna Eknath Gatne has also saved many other lives from drowning in the Bhima river during 1964, 1968 and 1969. Shri Gatne has repeatedly exhibited selfless courage and presence of mind in saving the lives of a number of persons.

21. Shri Rangappa Bhimgowda Patil,
Village Mudalgi, District Belgaum,
Karnataka.

On the 10th August, 1971, at about 10.15 hours, Shrimati Basavva of village Mudalgi and a patient of chronic headache, jumped into the village well in an attempt to commit suicide. On hearing an alarm from two girls, Head Constable Shri Basavanni Veerappa of Mudalgi Police Outpost rushed to the spot along with other policemen. Unmindful of the risk involved, he dived into the well, lifted the woman holding her by the hair and called for assistance. At this juncture, while other persons gathered at the well, hesitated to dive into the well, Shri Rangappa Bhimgowda Patil, aged 21 years, jumped into the well and helped Shri Basavanni Veerappa to hold the woman and tie a rope by which she was later pulled up by the villagers and other policemen.

Shri Rangappa Bhimgowda Patil exhibited conspicuous courage in saving the life of the woman in circumstances which were regarded as hazarduous by others.

22. Shri Adhir Chandra Das,
1, Radhika Mohan Sen Road,
Kadai, Behrampore, District Murshidabad,
West Bengal.

On the 11th June, 1972, Shri Nimai Chandra Talukdar, aged 16 years, was vending ice-cream in the 362 Down Lalgola-Sealdah passenger train stationed at Behrampore railway station. As the train steamed off, he came out of the compartment but his leg slipped off the foot-board and went through the gap between the platform and the lower foot board of the train. His-ice-cream box hanging from his shoulder and neck also got entangled with the foot board and his right leg was being dragged along the edge of the platform. Shri Adhir Chandra Das, Zonal Supervisor, Police Wireless, Murshidabad who happened to be present at the platform at that time, rushed to the body, clasped him with his arms and tried to pull him off to safety. In that effort he too fell on the platform but still held the boy with force and prevented him from slipping under the wheels of the train. For a considerable length, Shri Das was also dragged along with the boy. Ultimately he was successful in pulling out the boy with great difficulty and saved him from death. Shri Das later became unconscious due to burts, exhaustion and great nervous strain but recovered after some time.

Shri Adhir Chandra Das displayed exemplary courage and resourcefulness in saving the life of the boy in circumstances which exposed him to grave bodily injury.

23. Shri N. Sanatombi Singh,
Driver,
Office of the Area Organiser,
SSB Manipur, Imphal.

On the 29th August, 1972 at about 7.45 A.M. an explosion took place in the house of Shri Thambalngou Singh, a licensed fire-works manufacturer, killing him, his son and his neighbour's son. Due to the intensity of the explosion, besides the house of the manufacturer, 6 neighbouring houses including a temple and school were also completely blown up. The children of the school who were trapped under the debris of the school shouted for help. None of the spectators had the courage to rescue them as the building was falling and was engulfed in fire and smoke. On hearing the cries of the children, Shri N. Sanatombi Singh who was nearby, rushed into the building and rescued three children. He also rescued an old lady of 90 years who was caught in the fire but she later died in the hospital.

Shri N. Sanatombi Singh displayed exemplary courage and bravery at great risk to his personal safety.

24. Shri Sarup Singh (G/152538),
41 Road Maintenance Unit (GREF),
C/o 99 A.P.O.

On the 20th May, 1972, a big road block at km 78.6 occurred on North Sikkim Highway. A Platoon of Pioneer Company, deployed to clear the road-block was not able to make progress

due to the slide being active and the boulders continuing to rool down. As the road-block was to be cleared at the earliest for taking the Aerial Ropeway Cable across for launching to move the vital defence stores and rations for emergent works ahead. Shri Sarup Singh (Mason) was entrusted the task of clearing the land slide. During the operations, another slide occurred bringing down boulders and volumes of debris. At this moment, with great presence of mind and alertness, Shri Sarup Singh warned all his men of the approaching danger. As they were running to safety, one Pioneer in the work force was hit by a rolling boulder and was carried down the valley along with the debris. Shri Sarup Singh immediately jumped down the valley to save the Pioneer, knowing full well the danger of being engulfed in the debris. In utter disregard of his personal safety, he rescued the injured person who unfortunately sccumbed to injuries.

25. Leading Hand Chander Singh Rawat (G/63602), 1638 PNR Coy-(GREF), C/o 56 A.P.O.

On the 30th May, 1972, at about 1900 hours, a vehicle of 820 Tpt pl. carrying three GREF personnel while returning from work, came under a sudden slide and fell into a 1000 feet deep gorge of the Alaknanda river. The slope was very steep, with no track to go down into the gorge for rescuing and evacuating the casualties. It was under these conditions that Leading Hand Chander Singh Rawat of 1638 PNR Coy. (GREF) and his party were detalied to descend into the gorge, search the victims, rescue them from the debris and carry them up the precipitous slope without any loss of time.

L/Hand Chaner Sing Rawat proceeded to carry out his task with a rope tied around his waist, exhorting and instilling confidence in his men. Inching his way down, he and his men, reached close to the casualties and with the help of improvised torches, rescued the victims from underneath the debris, rendered first aid and sent three of them up one by one to the waiting ambulance. In utter disregard to his personal safety and with untiring zeal, Shri Rawat continued to work till the last man was brought out to safety. But for his courage and promptness, it would not have been possible to carry out the rescue work under hazardous conditions.

26. Master Navneet, Chowfla, C/O Principal, Dalhousie Public School, Dalhousie, Himachal Pradesh.

On the 3rd June, 1973, Master Navneet Chowfla, a ten year old student of the Dalhousie Public School was on a picnic with other boys of the school at Khajjiar, a tourist resort in Chamba town of Himachal Pradesh. He along with Paramjit Singh, aged 13 years, were fishing in the Khajjiar lake when the latter slipped and fell into the lake. Seeing him drowning, Master Chowfla got into the lake holding the railing with one hand and succeeded in catching the other boy by his hair and brought him back to the bank of the lake without anybody's help. Master Navneet Chowfla showed exemplary courage and presence of mind in rescuing Paramjit Singh.

A. MITTRA
Secretary to the President.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 18th December 1973

RESOLUTION

No. 9(33)/72-CGP.—The Government have decided to constitute the plan for Glass Industry with the following composition for a period of two years from the date of this Resolution :—

Chairman

1. Shri K. H. Parikh, Managing Director, Bharat Ophthalmic Glass Limited, Durgapur-10.

Members

2. Shri J. A. Taktawala, Shree Vallabh Glass Works Limited, Anand Sojitra Road, Vallabh Vidyanagar, Via Anand (Gujarat).
3. Shri C. K. Somany, Director, Hindustan National Glass & Industries Ltd., 2, Wellsley Place, Calcutta.
4. Shri Ramesh Chand, Director, Mahalakshmi Glass Works (P) Ltd., Dr. E. Moses Road, Jacob Circle, Bombay.
5. Shri P. N. Roy, Director, The Indo-Asahi Glass Company Ltd., 30, Chittaranjan Avenue, Calcutta.
6. Shri D. R. K. Reddy, Managing Director, Associated Glass Industries Limited, Varadanagar, Kukatpally, Hyderabad.
7. Shri N. S. Sokhi, Technical Manager, Hindustan Vacuum Glass Ltd., Faridabad N.I.T. (Haryana).
8. Mr. Stevens Belknap, Managing & Technical Director, Borosil Glass Works Limited, 44, Khanna Construction House, Maulana Abdul Gaffar Road, Worli, Bombay.
9. Shri J. P. Agarwal, Director, Ig Class Industries Private Ltd., Pimpri, Poona-18.
10. Shri Laxman S. Agarwal, Chairman & Managing Director, Sylvania & Laxman Limited, 68/2, Najafgarh Road, New Delhi.
11. Shri S. Ramachandran, Works Manager, Fibreglass Pilkington Limited, 9, Wallace Street, Bombay.
12. Shri Tapan K. Roy, Managing Director, The Bengal Electric Lamp Works Limited, 4, Fairlie Place, Calcutta-1.
13. Shri P. R. Latey, Chief (Engineering), Planning Commission.
14. Shri D. Das Gupta, Deputy Director General, I.S.I. Manak Bhavan, 9, Bahadur Shah Safar Marg, New Delhi. Shri G. P. Saraswat, Assistant Director is alternate Member.
15. Shri S. R. Kapur, Deputy Secretary, Ministry of Industrial Development.
16. Shri K. D. Sharma, Director, Central Glass and Ceramic Research Institute, Calcutta.
17. A representative of the Ministry of Commerce.
18. A representative of the DC(SSI).

Member-Secretary

19. Shri D. S. Chabbal, Development Officer, (Glass) DGTD, Udyog Bhavan, New Delhi.

The functions of the panel will be as under :—

(a) To make a detailed assessment of the requirements of raw materials and to explore ways and means of establishing agencies for supply of standardised raw materials for glass industry and to make assessment of the requirement of machinery/spare parts for glass industry with a view to encouraging the production in the country.

(b) To suggest norms of efficiency with a view to eliminating the wastages of fuel and raw materials, obtaining maximum production, improving quality and reducing costs.

(c) To recommend measures for securing fuller utilisation of installed capacity and for improving the working of the industry, particularly of the less efficient units.

(d) To suggest measures for stepping up exports, especially of items which have surplus capacity.

(e) To advise on establishing a suitable machinery for ensuring steady development in the field of training technical personnel.

(f) To suggest ways and means for import substitution of raw materials, spares and other connected equipments.

(g) To advise on any matter relating to the industry on which the Central Government may request the panel to advise and undertake enquiries for the purpose of enabling the panel to so advise.

N. N. TANDON, Jt. Secy.

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

(DEPARTMENT OF FAMILY PLANNING)

New Delhi, the 19th December 1973

RESOLUTION

No. F.20020/2/73-CAC(FP).—In partial modification of the Ministry of Health and Family Planning (Department of Family Planning) Notification No. 2-23/73-Ply, dated the 30th July, 1973, the Government of India have decided that Deputy Minister of Health and Family Planning shall be Chairman of the Executive Committee of the Central Family Planning Council *vice* Minister for Health and Family Planning.

ORDER

Ordered that a copy of the resolution be communicated to all the State Governments/Union Territories. Ordered further that the Resolution be published in the Gazette of India for information.

RESOLUTION

No. F.20020/3/73-E&C(FP).—The Nirodh Advisory Committee constituted *vide* Ministry of Health & Family Planning and Works Housing & Urban Development (Department of Family Planning), Resolution No. 8-10/69-NMO/ME(FP), dated 9th July, 1970 is hereby wound up.

ORDER

Ordered that a copy of the resolution be communicated to all the State Governments/Union Territories. Ordered further that the Resolution be published in the Gazette of India for information.

A. P. ATRI, Dy. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE

(DEPTT. OF EDUCATION)

New Delhi, the 18th December 1973

No. 12-8/71-YSI(3).—In continuation of the Ministry of Education and Social Welfare Notification of even number dated the 7th December, 1973, Shri Shahid Alikhan, Joint Secretary, Ministry of Education & Social Welfare, is hereby nominated as a Member of the Board of Governors of the Society for the National Institutes of Physical Education & Sports, *vice* Shri Kanti Choudhuri, with effect from 30th October 1973.

T. S. SWAMINATHAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF HEAVY INDUSTRY

New Delhi, the 31st December 1973

RESOLUTION

No. 3-80/73-HM(I).—The question of the steps to be taken to organise production of sugar in a manner as to meet the minimum needs projected at the end of the Fifth Five Year Plan, has been engaging the attention of the Government for some time. The distinguishing feature of this industry is that production of sugar is primarily cooperativised as a corollary to the formation of cane cooperatives. It has been found in recent years that a great degree of mismatching has taken place between the financial ability of the sugar manufacturers and the competence of the sugar machinery manufacturers to supply equipment. The machinery manufacturers in the country are able to supply 21 sugar plants of standard size a year and the principal deficiency has been lack of orders and, in case there have been orders, lack of ability to sustain them with adequate financial backing. The system of financing sugar projects by the Industrial Finance Corporation of India, the State Govt. and the sugar cooperative also becomes relevant in this context. The fact, however, remains that unless the procedure is streamlined, it is likely that the sugar production by the end of the Fifth Five Year Plan will be short of the minimal requirements.

2. In order to find a balanced and equilibrated solution of this problem of matching the machinery capability with the ability of the sugar manufacturers to harness them to production in time, Government have considered it necessary to set up a Committee consisting of non-officials and officials to go into this matter and make recommendations to Govt. on this subject.

3. The Committee shall consist of the following :—

Chairman

1. Shri S. Sivaraman, Member, Planning Commission.

Members

2. Shri I. J. Naidu, Addl. Secy., Ministry of Agriculture.
3. Shri S. M. Ghosh, Joint Secretary, Ministry of Heavy Industry.
4. Chairman, Industrial Finance Corporation of India Ltd.
5. Chief Director Sugar and Vanaspathi Directorate, Ministry of Agriculture.
6. President, Sugar Machinery Manufacturers' Association.
7. Secretary, National Cooperative Development Corporation.

8 & 9. Two representatives of the Sugar Machinery Manufacturers.

10 & 11. State Directors in charge of sugar, Govts. of Maharashtra and Uttar Pradesh.

Member-Secretary

12. Shri P. R. Dasgupta, Dy Secretary, Ministry of Heavy Industry.

The following will be the terms of reference to the Committee :

(i) to work out the exact production targets of sugar during the Fifth Five Year Plan period, year to year.

(ii) to work out the plan for meeting the requirements :
(a) by expansion of existing factories.
(b) by starting new factories.

(iii) to work out the requirements of sugar plants and the delivery schedule accordingly.

(iv) to work out a comprehensive system of financing for the sugar plants which will enable them to place orders on sugar machinery manufacturers.

(v) to evolve a system or agency for bulk ordering of sugar plants in order that the standard components, particularly electricals, will be ordered in advance in order to co-ordinate with the delivery schedule of the sugar plants.

(vi) to work out the investment and input needs in the sugar machinery sector for supply of the number of plants required and suggest a time-phased allocation policy for materials and credit policy for investment finance.

4. The Committee shall submit its Report to the Government of India in the Ministry of Heavy Industry within eight weeks.

RESOLUTION

No. 2-85/73-HM(I).—The Government have notice that for some years there has been a certain degree of under utilisation of capacity installed for manufacture of textile machinery. The projections of requirements of textiles, however, have brought into focus the need to step up the capacity for manufacture of textile machinery and immediate steps are to be taken in order to see that the competence of the

textile manufacturers to please orders of textile machinery is generated while the textile machinery capacity is so organised as to meet the demand. It has also been noticed that the renovation of the textile industry has been pushed back from year to year as a result of which productivity has been going down and a stage appears to have reached that a plan for renovation and modernisation cannot be held back.

2. In order that a comprehensive plan for the Textile Machinery Industry during the Fifth Five Year Plan could be worked out, Government have considered it necessary to appoint a Committee consisting of non-officials and officials to go into this subject and make recommendations to the Government.

3. The Committee shall consist of the following :—

Chairman

1. Shri M. Sondhi, Secretary, Ministry of Heavy Industry.

Members

2. Shri M. Narasimham, Additional Secy., Department of Economic Affairs, Ministry of Finance.
3. Shri S. M. Ghosh, Joint Secretary, Ministry of Heavy Industry.
4. Shri M. Narayanaswami, Joint Secretary, Ministry of Commerce.
5. Shri M. K. Venkatachalam, Joint Secretary, Deptt. of Banking.
6. Dr. A. K. Ghosh, Economic Adviser.
7. Textile Commissioner.
8. Shri Prabhu Mehta, Chairman, Textile Machinery Manufacturers' Association.
9. Chairman, Indian Cotton Mills Federation.

Member-Secretary

10. Shri P. R. Dasgupta, Deputy Secretary, Ministry of Heavy Industry.

4. The following will be the terms of reference to the Committee :

(i) to work out in precise terms the need for different types of textile machinery during the Fifth Five Year Plan Period;

(ii) to workout the requirements of textile machinery for modernisation and renovation needs of the existing mills in a time-phased manner for the Fifth Five Year Plan Period;

(iii) to work out the total investment outlays needed for (i) and (ii) by the Textile machinery manufacturers;

(iv) to work out a production and financial plan to match the production and financial needs of the magnitudes needed; and

(v) to suggest financing and production schemes as are considered necessary in the light of the requirements of textile machinery during the Fifth Five Year Plan period for additional production as well as for renovation and modernisation.

5. The Committee shall submit its report to the Government of India in the Ministry of Heavy Industry within eight weeks.

P. R. DASGUPTA, Dy. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1974